वर्ष 51 ❖ अंक 02 ❖ फरवरी 2024

₹ 25/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 51 • अंक 02 • फरवरी 2024 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री राकेश मुटरेजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्पलेक्स, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : डॉ० विजय शर्मा

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org
editorial @ nirankari.org
Website : www.nirankari.org

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण हरदेव बाणी
6. अनमोल वचन
42. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथायें

12. चित्रकथा
34. किट्टी

कहानियां

8. अनोखे उपहार
— राधेलाल 'नवचक्र'

10. तेनालीराम की सूझबूझ
— हरिंद्र सिंह

20. सुबह का भूला
— राजेन्द्र निशेश

26. सुन्दरवन की एक सुबह
— हरजीत निषाद

30. नगाड़ों की आवाज
— कमल सोगानी

44. बेगाना दुःख — अपना दुःख
— दर्शन सिंह आशट

कविताएं

7. जागो बच्चो हुआ विहान
— जी. पी. शर्मा

11. बगिया में खिलते फूल,
तितली रानी
— उदय मेघवाल 'उदय'

19. बच्चे पढ़ने वाले
— शैलेन्द्र कुमार

19. अच्छे बच्चे
— सुदीप

25. गीत मधुर ये गाती है
— दीपक कुमार 'दीप'

25. चिड़िया
— उदय मेघवाल

33. अच्छा लगता है
— भानुदत्त त्रिपाठी

47. पुस्तक
— महेन्द्र सिंह शेखावत

47. प्यारी कलियाँ
— गोविन्द भारद्वाज

विशेष/लेख

16. छोटा—सा तिल
बड़े बड़े गुण
— दीपांशु जैन

18. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
— घमंडीलाल अग्रवाल

22. ध्रुवीय लोमड़ी
— डॉ. परशुराम शुक्ल

24. महालत
— परशुराम शुक्ल

28. खरगोश
— कैलाश जैन

32. हंस
— कमल सोगानी

38. प्रवासी पक्षियों का स्वागत
— गोपाल जी गुप्त

जागरूक रहकर ध्यान से जिएँ

जब शिशु का जन्म होता है, उसी दिन से उसे प्यार मिलता है और उसका अच्छी तरह से ध्यान रखा जाता है। उसके दूध का समय माँ अच्छी तरह से जानती है और उसको भूख लगने से पहले ही उसको दूध देती है। बच्चा बड़ा होने लगता है और उसको परिवार के सदस्यों का प्यार और दुलार भी मिलता है। हर कोई उसकी परवरिश में उस बालक की सहायता करता है।

बच्चा बड़ा होता है, चलने लगता है, गिरता है। माता–पिता कहते हैं, ध्यान से चलो। इसी प्रकार और बड़ा होता है तो कहते हैं पढ़ाई में ध्यान दो। सेहत और शरीर की ओर ध्यान दो। इस प्रकार जब वह कार्य करने लगता है तब भी कार्यालय, व्यापार में भी उसे कहा जाता है कि अपने कार्य पर ध्यान दोगे तभी सफल हो पाओगे।

एक बार एक व्यक्ति अपने व्यापार में इतना व्यस्त हो गया कि उसे अपने लिए समय निकालना मुश्किल हो गया और वह खिन्न रहने लगा। कार्य भी करता, कमाता भी बहुत परन्तु उसके जीवन में जिस खुशी, आनन्द, ऊर्जा का संचार होना चाहिए था। वह गुम होती जा रही थी। उसने अपनी समस्या अपने शिक्षक महोदय के सामने रखी।

शिक्षक ने उसे समझाया कि तुमने अपना ध्यान रखना बिल्कुल छोड़ दिया है। अपने लिए भी समय निकालो। कुछ दिन व्यापार से छुट्टी लेकर कहीं दूर प्रकृति की गोद में जाकर बिताओ और सारी समस्याएँ और व्यापार की चिन्ता छोड़कर जाओ।

व्यापारी ने कहा कि व्यापार का कार्य तो मैं अपने मैनेजर और कर्मचारियों को सौंप सकता हूँ परन्तु अपना घर कैसे छोड़कर जाऊँ। वहाँ मेरी धन–सम्पदा है। कोई इतना विश्वस्त नहीं, जिस पर विश्वास किया जा सके। तब शिक्षक ने कहा कि 'आप अपने सहायक जो घर में रहता है और तुम्हारे खाने–पीने की व्यवस्था करता है, उसे कह दो कि मैं कुछ समय के लिए किसी कार्य से बाहर जा रहा हूँ और मैं कभी भी, किसी समय भी वापस आ सकता हूँ, ध्यान रखना।' यही बात कहकर वह व्यापारी घर से निकल गया।

इधर सहायक हमेशा यही सोचता कि अभी मालिक आने वाला है। हमेशा वह इसी सोच में रहता था। कोई भी आहट होती तो वह समझता कि मालिक आ गया। एक दिन अचानक मालिक रात को आया तो सहायक ने दरवाजा खोला। इस पर मालिक आश्चर्य से भर गया कि यह सुस्त सहायक इतना जागरूक कैसे हो गया कि रात्रि में मेरे आने की आहट से ही उठकर आ गया। पूछने पर सहायक ने बताया कि जब से आप कह गये थे कि ध्यान रखना तो मुझे हमेशा यही लगता कि आप कभी भी आ सकते हैं। इसलिए मैं रात–दिन जागरूक रहने लगा और मुझे समझ आ गया कि अगर कोई भी कार्य करें तो ध्यानपूर्वक और जागरूक होकर करें।

साथियों! जागरूक होकर जीवन जीना ही जीवन जीने की कला है। जागरूक रहेंगे तो किसी को क्रोध करना, द्वेष करना, कटु बोलना, अपमान करना हमारे जीवन से कोसों दूर रहेंगे और जीवन में प्रेम, प्यार, सत्कार, सम्मान, मृदुवाणी, उचित व्यवहार इत्यादि अनेकों गुण अपने–आप आ जाएँगे और यही जीवन की सफलता का एकमात्र उपाय है।

— विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण हरदेव बाणी

१ तू ही निरंकार

हे अविनाशी परम प्रकाशी निर्गुण निराकार।
नित्य सनातन आदि अनादि सृष्टि के आधार।
जब ये धरती अम्बर न थे और न था संसार।
तब तू ही था तू ही रहेगा आगे भी करतार।
कायम दायम रहने वाला अजर अमर दातार।
क्या गायेगा कोई तेरी महिमा अपरम्पार।
तेरा रुतबा सबसे ऊँचा जग के सृजनहार।
नमस्कार 'हरदेव' है करता तुझको बारम्बार।

पद संख्या – 1
तू ही पिता है तू ही माता नित नित तुझको नमन करूँ।
तू ही है बन्धु तू ही भ्राता नित नित तुझको नमन करूँ।
जग कर्ता हे भाग्य विधाता नित नित तुझको नमन करूँ।
सुख सागर आनंद दाता नित नित तुझको नमन करूँ।
निरंकार है सबसे बड़ा तू नित नित तुझको नमन करूँ।
पल छिन मेरे साथ खड़ा तू नित नित तुझको नमन करूँ।
मैं मछली का तू सागर है नित नित तुझको नमन करूँ।
जुदा न होता तू पल भर है नित नित तुझको नमन करूँ।
तू ही समाया है अंग संग में नित नित तुझको नमन करूँ।
रंग जाऊँ तेरे ही रंग में नित नित तुझको नमन करूँ।
जित जाऊँ उत तुझे ही पाऊँ नित नित तुझको नमन करूँ।
गुण तेरे 'हरदेव' गाऊँ नित नित तुझको नमन करूँ।

अनमोल वचन

❖ एक बोल संवारने वाले और एक बिगाड़ने वाले होते हैं लेकिन कर्म का स्थान बोलों से भी ऊँचा है।

❖ तलवार के ज़ख्म भर जाते हैं परन्तु जुबान के द्वारा कहे गये वचन दिलों को छलनी कर देते हैं।

❖ अहंकार अगर ऋषि—मुनियों को भी आ जाये तब भी वह पतन का ही कारण बनता है।

❖ हमेशा अच्छों का संग करें। पवन का संग पाकर पाँव के नीचे रोंदी जा रही धूल भी आसमान को छू लेती है।

❖ अज्ञानता के अंधकार में रहकर तय किया गया जीवन सफर, धरती पर बोझ के समान है।

❖ घृणा—वैर, लोभ—लालच मन के रोग हैं। प्रेम, करुणा, दया आने पर ये रोग चले जाते हैं।

❖ हम केवल मानव का तन लिये ही न फिरें बल्कि मानवीय गुणों से युक्त भी हों।

❖ प्रभु—स्तुति में लगी वाणी तथा प्रेम और सत्य की तरफ से हटकर जो कुछ भी बोला जा रहा है महापुरुषों ने उसे बकबक कहा है।

❖ सन्तों की ऊँची मत ले लो जीवन की चाल सुन्दर हो जायेगी।

❖ ठीक सुनकर मानना और उसके अनुसार चलना आ जाये तो वाकई हम लाभान्वित होते हैं।

❖ आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है इसका मानवता की ओर जाग्रत होना बहुत जरूरी है।

❖ अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।

— बाबा हरदेव सिंह जी

❖ संतुष्ट रहने वाले के लिए सदा सभी दिशायें सुखदायी हैं जैसे जूता पहने वाले को कंकड़ और कांटे आदि से दुख नहीं होता।

— भागवद्गीता

❖ कपटी एक न एक दिन पतन की खाई में गिरता है। — महात्मा विदुर

❖ आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है।

— एमर्सन

❖ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग की प्राप्ति से भी बढ़कर है। सन्तोष सबसे बड़ा सुख है उससे बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है।

— वेदव्यास

❖ भलाई से बढ़कर जीवन और बुराई से बढ़कर मृत्यु नहीं है।

— आदिभट्ल नारायण दासु

❖ दयालु लोगों का शरीर परोपकार से सुशोभित होता है, चंदन से नहीं।

— भतृहरि

जागो बच्चो हुआ विहान

कविता : जी. पी. शर्मा

जागो बच्चो हुआ विहान,
मीठे कलरव चिड़ियां करती।
छोड़ के घोंसला नभ में उड़ती,
कंधे पर हल–हेंगा लेकर–
खेतों को चल पड़े किसान।
जागो बच्चो हुआ विहान।।

पूरब दिशा में छायी लाली,
चारों ओर फैली उजियाली।
सतरंगी किरणों को लेकर–
देखो, निकल पड़े दिनमान।
जागो बच्चो हुआ विहान।।

देखो डाली डोल रही है,
काली कोयल बोल रही है।
अपनी बोली में वह तुमको–
रह–रहकर देती है तान।
जागो बच्चो हुआ विहान।।

तुम भी जागो, आँखें खोलो,
अपनी भाषा में कुछ बोलो।
जग के होने वाले हो तुम–
एक से एक महान।
जागो बच्चो हुआ विहान।।

मन के निर्मल, स्वच्छ सलौने,
नितदिन नूतन अजब खिलौने।
भेद नहीं है ऊँच–नीच का–
तू बाल रूप भगवान।
जागो बच्चो हुआ विहान।।

अनोखे उपहार

– राधेलाल 'नवचक्र'

आज राहुल का जन्मदिन है। सभी दोस्तों को उसने इस अवसर पर अपने घर बुलाया है। छुट्टी का दिन है, इसलिए कार्यक्रम दिन में ही रखा है।

समय होते ही एक–एक कर सभी दोस्त उसके घर आने लगे। थोड़ी देर में सभी आ पहुँचे। राहुल को अचरज हुआ, उसके जन्मदिन पर उसे उपहार में देने के लिए किसी ने कुछ भी नहीं लाया था। सबके सब खाली हाथ आ धमके थे। उसे बहुत बुरा लग रहा था, मगर कुछ बोला नहीं। चुप रहा।

वैभव ने राहुल के मन की बात भाँप ली। उसके उदास चेहरे ने सबकुछ बता दिया था। अतएव उसने अकेले में राहुल से कहा, ''हम लोगों ने तुम्हारे जन्मदिन पर देने के लिए जो उपहार लाएँ हैं, वे परेश के घर रखे हैं।''

''ऐसा क्यों?'' राहुल ने हैरान हो पूछा।

''अनोखे उपहार हैं।'' सुमन दोनों की बातें सुन एकाएक वहाँ आ टपका।

''अनोखे हैं ... मतलब?'' राहुल को कुछ भी समझ में नहीं आया।

''बिल्कुल, ''सुमन अपनी बात पर डटा रहा।

''आज तक शायद किसी ने भी किसी के जन्मदिन पर ऐसा उपहार दिया होगा।'' वैभव ने भी सुमन की बात पर जोर दिया।

''मगर यहाँ क्यों नहीं लाए; परेश के घर क्यों रखे हो?'' राहुल ने उन दोनों से पूछा।

''सारे उपहार वहाँ जमा हो चुके हैं। थोड़ी देर में यहाँ आ जायेंगे।'' वैभव ने बताया, ''परेश का घर तो ज्यादा दूर है नहीं। दरअसल हम लोग तुम्हें 'सरप्राइज' देना चाहते हैं और कोई बात नहीं है।''

थोड़ी देर बाद कुछ दोस्त परेश के घर जाकर एक ठेलागाड़ी पर सभी उपहार लाद कर ले आए। राहुल के घर के आगे जब ठेलागाड़ी रूकी तो

राहुल ने देखा, छोटे–छोटे सुन्दर गमलों में विविध किस्म के फूलों के पौधे हैं जिनमें मनमोहक फूल खिले हुए हैं।

राहुल सचमुच ऐसे उपहार को देखकर चकित रह गया। उसने सपने में भी ऐसे उपहार पाने की बात नहीं सोची थी।

अब वैभव ने ऐसे उपहार देने का रहस्य खोला, ''राहुल, रोहिन नायक कालोनी में एक तुम्हारा ही घर ऐसा है जिसके आगे फुलवारी नहीं है। उसके अभाव में औरों के घरों की अपेक्षा तुम्हारा घर बिल्कुल उजाड़ जैसा लगता है, सौन्दर्य और खुशबू से रहित। इससे कालोनी की सुन्दरता में भी धब्बा लग जाता है। इसे दूर करने के लिए हम सभी दोस्तों ने मिलकर ऐसी योजना बनायी और जिसे तुम्हारे जन्मदिन पर अंजाम दिया है।''

''वैसे हम लोगों ने इसके पहले तुम्हारा ध्यान इस ओर खींचने के लिए कई बार कोशिश की, मगर तुमने हर बार हमारी बात को नजरअंदाज कर दिया था।'' परेश बोला, ''ऐसी हालत में हमें ऐसा तरीका अपनाना पड़ा। ये उपहार तुम्हारे इस जन्मदिन को यादगार बना देंगे। हमारा ऐसा मानना है।''

''बहुत खूब!'' राहुल के मम्मी–पापा जो पास ही खड़े सब कुछ देख–सुन रहे थे, एकाएक हँस पड़े, ''हम लोगों ने भी राहुल का ध्यान पुष्पोद्यान की ओर खींचने की खूब कोशिश की थी, मगर हर बार इसने हमारी बात टाल दी। आज इसके जन्मदिन पर ऐसे उपहार देकर तुम सबने सचमुच एक नेक कार्य किया है।''

''ठीक है।'' राहुल ने दोस्तों से कहा, ''पहले हम फूल–पौधों के इन गमलों को घर के आगे सजाकर रखें। फिर आगे कार्यक्रम पर ध्यान देंगे।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं!'' एक स्वर में सभी दोस्त बोले और झटपट उन गमलों को उन्होंने इस तरह सजाकर रखे कि राहुल के घर की सुंदरता काफी बढ़ गयी।

खुश हो राहुल मुस्कुराया, ''दोस्तो, तुम्हारे इन अनोखे उपहार को मैं खूब प्यार करूँगा। सौन्दर्य और खुशबू से भरा ये उपहार कभी भुलाए नहीं जा सकते। सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद।''

फिर हँसी–खुशी के माहौल में राहुल का जन्मदिन धूमधाम से मना। ★

तेनालीराम की सूझबूझ

– हरिंद्र सिंह गोगना

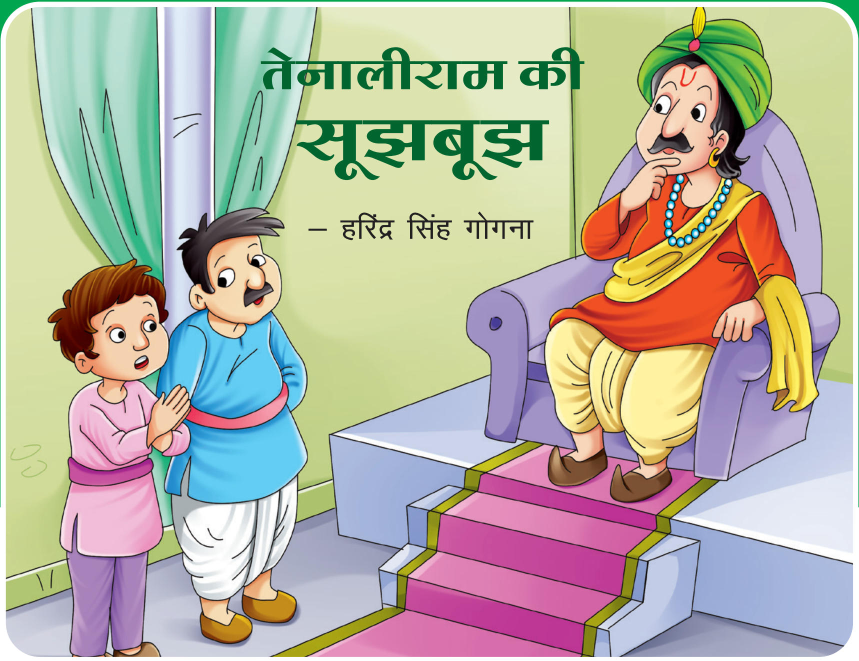

एक बार दो आदमी राजा कृष्णदेव राय के दरबार में हाजिर किए गए। एक का नाम भोला और दूसरे का घनश्याम था।

भोला हाथ जोड़कर बोला– महाराज, यह मेरा मित्र घनश्याम है। कुछ महीने पहले मुझे अपने गाँव जाना था तो मैंने अपनी दस स्वर्ण मुद्राएँ इसके पास धरोहर रखी थीं। आज जब वापस आकर मैंने अपनी मुद्राएँ माँगी तो यह वापिस देने से साफ मुकर गया, अब आप ही न्याय कीजिए।

राजा ने घनश्याम से पूछा तो वह मुकर गया।

राजा सोच में पड़ गए कि दोनों में से सच्चा कौन है और झूठा कौन? अतः तेनालीराम को सच–झूठ का निर्णय करने के लिए कहा।

तेनालीराम कुछ पल सोचकर भोला से बोला– हाँ तो भाई भोला, जब तुमने मुद्राएँ घनश्याम को दीं तो वहाँ कोई तीसरा भी था?

जी हाँ एक कुआँ जरूर वहाँ था। सीधे–सादे भोला ने कहा तो सभी दरबारी हँसने लगे। भला कुआँ भी कभी गवाही दे सकता है क्या?

लेकिन तेनालीराम बोला– ऐसा करो भोला, तुम जाकर उस कुएँ से एक मटका पानी का भर लाओ, अभी सच–झूठ का फैसला हो जाएगा। भोला ने सिर झुकाया और चला गया।

सभी दरबारी और राजा हैरान थे कि तेनालीराम आखिर साबित क्या करना चाहता है? घनश्याम भी इसी बात से विचारमग्न था।

कुछ देर बाद तेनालीराम ने घनश्याम से पूछा– क्यों घनश्याम। तुम्हारा मित्र भोला अभी तक लौटकर नहीं आया, क्या कारण हो सकता है?

–जी कुआँ यहाँ से बहुत दूर है। इसलिए देर लग रही होगी। घनश्याम के मुँह से अचानक निकला।

–महाराज फैसला हो गया। भोला ने सचमुच घनश्याम को मुद्राएँ दी थीं। भला इसे कैसे मालूम कि कुआँ यहाँ से बहुत दूर है? तेनालीराम ने कहा।

घनश्याम ने शर्म से सिर झुका लिया था।

तेनालीराम की सूझबूझ से दरबार फिर जयकारों की आवाज से गूंज उठा।

अब तक भोला भी लौट अया था। घनश्याम ने उससे क्षमा माँगी और महाराज से वादा किया कि वह आज ही अपने मित्र की धरोहर उसे लौटा देगा और भविष्य में फिर किसी से ऐसा छल नहीं करेगा।

बगिया में खिलते फूल

– उदय मेघवाल 'उदय'

संग हवा के झूमें गाएं।
दूर–दूर तक महक लुटाएं।
डाली पर ही लगते अच्छे,
बगिया में खिलते फूल।

कांटों में रहकर मुस्काते।
जो भी देखें उन्हें लुभाते।
पृथक–पृथक या गुच्छे–गुच्छे,
बगिया में खिलते फूल।

सजी हुई है क्यारी–क्यारी।
फूलों की ये दुनिया प्यारी।
देते नहीं कभी ये गच्चे,
बगिया में खिलते फूल।

मन से फूलों जैसे कोमल।
चाहे सदा प्यार का आंचल।
होते जग के सारे बच्चे,
बगिया में खिलते फूल।

तितली रानी

कितनी सुन्दर रानी तितली।
लगती बड़ी सयानी तितली।
पास बुलाओ, पास न आती,
करती है मनमानी तितली।

फूलों पर मंडराती तितली।
इनसे नेह निभाती तितली।
हरदम केवल फूलों से ही,
मुस्काती बतियाती तितली।

फूलों की है आली तितली।
शोभा लिए निराली तितली।
पी–पीकर फूलों का रस ही,
होती है मतवाली तितली।

नित उपवन में आती तितली।
हमको बहुत लुभाती तितली।
खुशियां दे हम खुशियां पाएं,
मानो हमें सिखाती तितली।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

केशव और रोहन बड़ी ही मस्ती में फुटबाल खेल रहे थे। खेलते–खेलते केशव ने फुटबाल को बहुत ऊँचा उछाल दिया।
उसके बाद उनकी फुटबाल न जाने कहाँ गुम हो गई, वे उसे ढूंढने में लग गए।
फुटबाल को ढूंढते–ढूंढते केशव ने जमीन पर बिछी हुई तरबूज की बेल और एक जामुन के पेड़ को देखा।

जामुन के पेड़ पर खूब सारे काले–काले जामुन लगे हुए थे। केशव ने रोहन को आवाज लगाई और जामुन के गुच्छे दिखाने लगा।

केशव ने रोहन से कहा– देखो रोहन, कितने काले और मीठे जामुन हैं पर हम तोड़ भी नहीं सकते। कितना ऊँचा पेड़ है?

प्रकृति की भी खूब रचना है। छोटे से जामुन को तो इतने ऊँचे पेड़ पर लगा दिया और बड़े से तरबूज को नीचे जमीन पर।

कितना अच्छा होता अगर जामुन जमीन पर लगे होते? रोहन चुपचाप खड़ा केशव की बात सुनता रहा।
अचानक जामुन के पेड़ से एक जामुन टूटकर केशव के सिर पर गिर गया। केशव एकदम से उछल पड़ा।
यह देखकर रोहन बोला– केशव तुम एक छोटे से जामुन के सिर पर गिरने से उछल पड़े। अगर यही तरबूज होता तो क्या होता?
केशव झट से बोला– फिर तो मेरा सिर ही फूट गया होता।
रोहन ने कहा– प्रकृति ने जो भी जैसे बनाया है वह अच्छा है। उसे किसी प्रकार का दोष देना गलत है।
बच्चों! इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रकृति की किसी भी रचना की निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह तो प्रकृति की रचना है और प्रकृति ने जो जैसा भी बनाया है वह अच्छा है।

छोटा सा तिल बड़े बड़े गुण

– दीपांशु जैन

प्रोटीन और विटामिनों से भरपूर होने के कारण तिल का पौष्टिक खाद्य पदार्थों में बड़ा महत्व माना जाता है। स्वास्थ्यवर्धक होने के अलावा इससे निर्मित चीजें स्वादिष्ट व रूचिकर लगती हैं। ठंड के दिनों में तिल का तेल और तिल से बने विविध व्यंजनों का सेवन करना बड़ा गुणकारी होता है। मकर संक्रांति के पर्व पर हमारे देश में तिल पीसकर बनाए उबटन से नहाना, तिल के लड्डुओं का सेवन करना और तिल का दान करने की परंपरा है।

तिल को तिल्ली के नाम से भी जाना जाता है। तिल सफेद, लाल और काले तीन प्रकार के मिलते हैं। इन सबमें काला तिल विशेष लाभप्रद माना गया है जो खाने, पूजा में व औषधि प्रयोग के लिए उपयुक्त होता है। सफेद तिल गुणों में मध्यम होता है जिससे तेल का निर्माण किया जाता है। लाल तिल हीन गुण वाले माने जाते हैं जिनका अधिक प्रयोग व्यंजन बनाने में किया जाता है।

तिल से बनाए जाने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों में गज्जक, रेवड़ी, बर्फी, केक, लड्डू, बिस्कुट आदि प्रमुख हैं। तिलों का तेल भी कम गुणकारी नहीं है। तेल का उपयोग न केवल खाने में किया जाता है बल्कि इससे शरीर की मालिश भी की जाती है। आयुर्वेद में तिल के तेल की मालिश की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है। वाग्भट में लिखा है कि प्रतिदिन मालिश करने से बुढ़ापा, थकावट व वायु निवृत्त होती है, दृष्टि बढ़ती है, प्रसन्नता, पुष्टता, आयु और निद्रा में वृद्धि के अलावा त्वचा की सुन्दरता व दृढ़ता प्राप्त होती है।

वैज्ञानिक मतानुसार तिल में 28 प्रतिशत प्रोटीन, 43 प्रतिशत चर्बी, 25 प्रतिशत शर्करा और प्रर्याप्त मात्रा में विटामिन ए, बी, चूना व लोहा होता है। इसमें तेल की मात्रा 48 प्रतिशत पाई जाती है। मस्तिष्क के स्नायु व मांसपेशियों को शक्ति देने वाला पदार्थ लैसीथीन भी तिल में पाया जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार तिल मधुर, स्निग्ध, बलवर्धक, कफ, पित्तनाशक, वात का क्षय करने वाला, उष्ण, अग्निवर्धक, तृप्तिदायक, दुग्धवर्धक, केशों के लिए लाभप्रद माना गया है। तिल घी और मक्खन से भी जल्दी पच जाने के विशेष गुण से युक्त होते हैं जो शरीर को चिकनाई प्रदान करते हैं।

ठंड के मौसम में तीस से पचास ग्राम तक तिल नियमित रूप से प्रतिदिन रात्रि में सोने से पूर्व खाना स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार से लाभदायक होता है। अच्छी प्रकार चबाकर खाने से दाँत, मसूढ़े, दाढ़ व जबड़े मजबूत व निरोगी बनते हैं और कान की बीमारियाँ नहीं होती। शरीर में शक्ति आती है, स्नायुविक तंत्र व पेशियों को बल मिलता है, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

पाचन क्रिया को सुव्यवस्थित चलाने हेतु तिल में विशेष गुण होता है। इसके नियमित सेवनकर्ता को भूख अच्छी लगती है। अजीर्ण, कब्ज, चिड़चिड़ेपन, स्नायुविक दुर्बलता, स्मरण–शक्ति की कमी, मानसिक अस्थिरता, थकावट आदि की शिकायत नहीं होती।

अनेक प्रकार की बीमारियों में तिल का सेवन कर लाभ उठाया जा सकता है। चर्म सम्बन्धी विकारों में तिल के तेल की नियमित मालिश

करना विशेष रूप से लाभप्रद पाया गया है जिससे त्वचा की खुश्की दूर होकर, रेशम–सी चिकनी व कांतिपूर्ण बनने में सहायता मिलती है।

कब्ज और बवासीर से पीड़ित रोगी को प्रातः नियमित रूप से एक चम्मच काले तिल के साथ मिश्री और मक्खन को मिला मिश्रण खाना चाहिए। खूनी बवासीर हो तो काले तिल के साथ दही का सेवन करने से आराम मिलेगा। पैरों में अधिक ठंडापन महसूस हो तो भूने हुए तिलों को गुड़ मिलाकर देशी घी में गूंथकर लड्डू बना लें। ठंड के दिनों में नियमित रूप से सेवन करें। तकलीफ दूर हो जाएगी।

दाँतों के लिए भी तिल फायदेमंद हैं सवेरे दातुन या मंजन के बाद काले तिल बिना कुछ खाये–पिये चबा–चबाकर खाने से दाँत मजबूत होते हैं।

मोच आ जाने पर तिल की खल पीसकर थोड़ा पानी डालकर गर्म कर लें। सहने योग्य गर्म–गर्म ही मोच पर बाँधे। लाभ होगा।

यदि सर्दी लगकर सूखी खाँसी हो गई है तो चार चम्मच तिल और इतनी ही मिश्री मिलाकर एक गिलास पानी में इतना उबालें कि पानी आधा रह जाए। फिर इसे पी जाएँ। यह प्रयोग दिन में तीन बार करें।

सूखी खाँसी, फेफड़ों के रोग, श्वास, नेत्र रोग, गठिया आदि की बीमारियों में काला तिल लाभप्रद होता है। इसमें संदेह नहीं कि यदि हम शरद ऋतु में तिलों का विविध रूपों में, नियमित रूप से सेवन करें और तिल के तेल की मालिश करें तो हमारा शरीर सदैव स्वस्थ निरोगी बना रहेगा। ★

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

— घमंडीलाल अग्रवाल

प्रश्न : बंदूक की गोली लक्ष्य से टकराने पर गर्म क्यों हो जाती है?

उत्तर : जब बंदूक से गोली निकलती है तो उसका वेग अत्यधिक होता है। इसी कारण से गोली में ऊर्जा (गतिज ऊर्जा) भी ज्यादा रहती है। दूसरी ओर, गोली लक्ष्य से टकराते ही अपनी ऊर्जा खो देती है। साथ ही उसका वेग भी शून्य हो जाता है। परिणामस्वरूप, बंदूक की गोली लक्ष्य से टकराने पर गर्म हो जाती है।

प्रश्न : फैलाकर डालने से गीले कपड़े जल्दी क्यों सूख जाते हैं?

उत्तर : वाष्पीकरण की गति उसके तल पर निर्भर करती है। गीले कपड़ों में पानी होता है। जब कपड़ों को फैला दिया जाता है तो वाष्पीकरण खुले तल पर होता है जिससे वाष्पीकरण की गति बढ़ जाती है। इसी कारण से गीले कपड़े फैलाकर डाले जाते हैं ताकि वे शीघ्र सूख सकें।

प्रश्न : ट्यूबलाइट की रोशनी में छत का पंखा उल्टा घूमता हुआ क्यों दिखाई देता है?

उत्तर : रात्रि के समय तुम कमरे में जो ट्यूबलाइट जलाते हो, उससे प्रकाश की किरणें रूक–रूककर निकलती हैं लेकिन तुम्हें इसका अनुभव नहीं हो पाता। तुम्हें तो बस ट्यूबलाइट से रोशनी लगातार निकलती प्रतीत होती है। जब पंखे के ब्लेडों के घूमने की आवृत्ति ट्यूबलाइट से निकलने वाली रोशनी की आवृत्ति से कम या जयादा हो जाती है तो छत का पंखा उल्टा घूमता हुआ दिखाई देता है।

प्रश्न : बिजली के उपकरणों में तीन मुँह वाला प्लग ही क्यों इस्तेमाल किया जाता है?

उत्तर : तीन मुँह वाले प्लग में एक पिन मोटी होती है और शेष दो पिनें बारीक। मोटी पिन से उपकरण की धातु का ढांचा भूमि के सम्पर्क में आ जाता है जिससे बिजली का झटका लगने की सम्भावना कम रहती है। सुरक्षा की दृष्टि को मद्देनजर रखते हुए अधिकतर तीन मुँह वाले प्लग प्रचलन में रहते हैं।

प्रश्न : ठंडे स्थानों पर मकान लकड़ी के क्यों बनाए जाते हैं?

उत्तर : लकड़ी ऊष्मा की कुचालक है। कुचालक पदार्थों का यह गुण होता है कि वे अन्दर की ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देते और बाहर की ऊष्मा को अन्दर नहीं आने देते। यही कारण है कि ठंडे स्थानों पर मकान प्रायः लकड़ी के बनाए जाते हैं ताकि ठंड में भी मकान गर्म रह सकें।

बच्चे पढ़ने वाले

– शैलेन्द्र कुमार

हम बच्चे पढ़ने वाले हैं,
पढ़ते हिलमिल खेला करते।
मिलकर बाधाओं से लड़ते,
बाधाओं से कभी न डरते।।

हम रहते फूलों से खिलकर,
हम सबका आदर करते हैं।
छोटों से हम प्यार दिखाते,
जैसे तारे आसमान पर।।

वैसे हम हरदम मुस्काते,
करते काम सभी हँसकर।
सबका मन खुश करते हैं,
हम बच्चे खुशी लुटाते हैं।।

अच्छा लगता सबको साथ,
मिलें विजय पताका फहराते।

अच्छे बच्चे

– सुदीप

अच्छे बच्चे जो होते हैं,
आज्ञाकारी वो होते हैं।
मात–पिता का कहना माने,
अच्छे बच्चे वही होते हैं।।

करते परिश्रम रात–दिन वो,
व्यर्थ समय न कभी खोते हैं।
विनम्रता का बाना पहने,
आदर भावी वो होते हैं।।

करते सहायता सबकी वो,
जो बड़े सहाई होते हैं।
नहीं किसी का करें अनादर,
सबके ही प्यारे होते हैं।।

सुबह का भूला

– राजेन्द्र निशेश

गोलू बन्दर बहुत ही चंचल स्वभाव का था। नित नई शरारतें करना और जंगल के दूसरे जानवरों और पक्षियों को सताना उसकी आदत का एक अंग बन गया था। दूसरों को सताने के नये–नये तरीके वह सोचता रहता। कभी बोलू खरहा को छिपकर कंकड़ मार देता और खीं–खीं करके हँसने लगता और कभी नीलू भैंस की दुम के साथ लटक जाता। कभी वह शेरू कुत्ते की पीठ पर अचानक सवार हो जाता, जिससे वह एकदम घबरा जाता। इस प्रकार वह प्रत्येक जानवर को तंग करने के ढंग अपना लेता। सभी जानवर उसे गंदा गोलू कहकर पुकारते, लेकिन इससे वह और चिढ़ जाता और दूसरी शरारतें सोचने लगता।

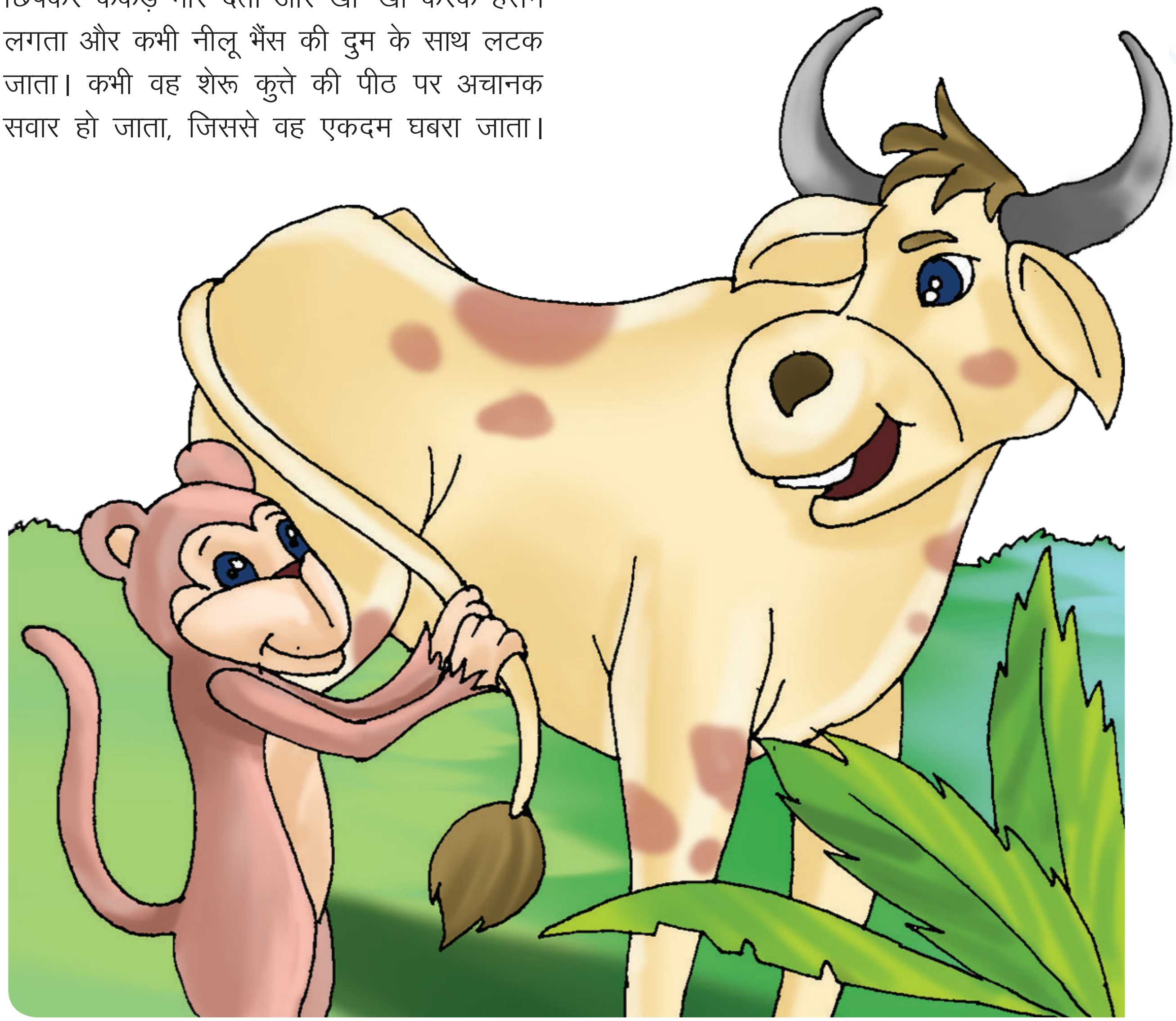

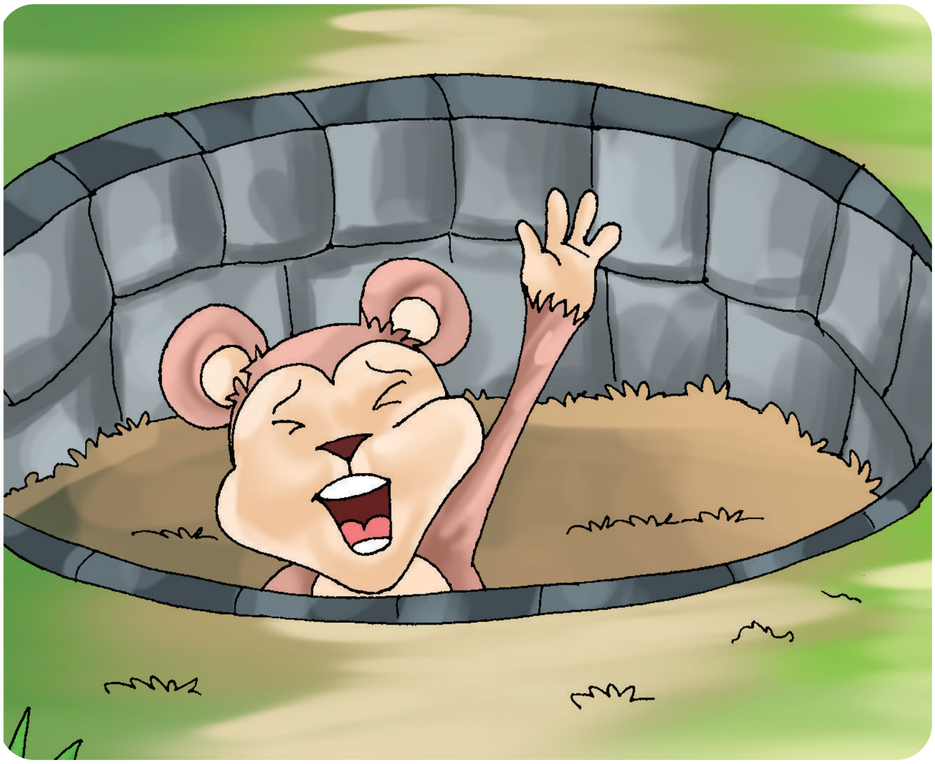

आमों का मौसम आने पर गोलू चीकू रीछ के बगीचे से आम चुराकर खा जाता। इतना ही नहीं खाने से अधिक आम के पेड़ों को अधिक नुकसान पहुँचाता। इसी प्रकार प्रत्येक फल के मौसम में वह चोरी करके फल खाता और टहनियों और पत्तों को तोड़–तोड़कर नीचे फेंकता। चीजों को तहस–नहस करने में अपनी हेकड़ी समझता। मौका मिलने पर पेड़ों में बनाये गये अन्य पक्षियों के घोंसलों को भी अपना निशाना बनाता और उनके अंडो को खा जाता अथवा नष्ट कर देता। सभी पशु–पक्षी उसकी नित नई शरारतों से बेहद दुःखी थे। वे उसे समझाते, लेकिन गोलू के कान पर जूँ तक न रेंगती।

एक बार तो उसने हद ही कर दी। अपने शरारती मित्रों के साथ मिलकर रात के अंधेरे में एक गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। कई दिनों में जब काफी गड्ढा बन गया तो उसने उसके ऊपर घास डालकर उसे छिपा दिया ताकि उसमें कोई जानवर गिर जाये और वह तालियाँ बजाकर मजे ले सके। लेकिन भगवान की मर्जी ऐसी हुई कि कई दिनों तक उस तरफ किसी जानवर का आना–जाना नहीं हुआ। अब उसे भी ध्यान नहीं रहा कि उसने गड्ढा कहाँ पर खोदा था? एक दिन वह अपनी ही धुन में जा रहा था और चलते–चलते उसी गड्ढे में जा गिरा और उसकी टाँग पर गहरा जख्म हो गया। वह दर्द से चीखने–चिल्लाने लगा। जब दूसरे जानवरों को पता चला तो वे बोले– "जैसी करनी, वैसी भरनी।"

लेकिन शेरखान उसे सुधारना चाहते थे। उन्होंने दूसरे जानवरों से कहा– 'भाइयों, गोलू बन्दर में अभी बचपना है, इसीलिए उसका मन शरारतों में लगा रहता है। लेकिन अगर उसे सुधरने का मौका दिया जाये तो निश्चित ही वह सुधार सकता है। अगर सुबह का भूला शाम को घर आ जाये तो उसे भूला नहीं समझना चाहिए।'

शेरखान की बात मानकर छैलू लोमड़ और उसके साथियों ने उसे बाहर निकाला और मीकू रीछ से उसकी मरहम–पट्टी करवाई। वह हाल में डॉक्टरी पढ़कर लौटा था। उसे हल्दी मिला दूध पीने को दिया गया।

गोलू ने सुन रखा था कि जैसे को तैसा दण्ड मिलता है, लेकिन अन्य जानवरों के व्यवहार ने उसकी आँखें खोल दीं। अब उसने मन ही मन किसी जीव को कभी न सताने की शपथ ले ली। ⭑

बर्फीले प्रदेश का एक अद्भुत जीव

ध्रुवीय लोमड़ी

— डॉ. परशुराम शुक्ल

लोमड़ी एक मांसाहारी वन्य जीव है। यह सम्पूर्ण विश्व में पायी जाती है। इसकी बाईस जातियाँ हैं; उनमें से एक है– ध्रुवीय लोमड़ी। लोमड़ी की अधिकांश जातियों के विषय में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है किन्तु ध्रुवीय लोमड़ी के विषय में जीव वैज्ञानिकों का ज्ञान बहुत सीमित है। अभी कुछ समय पूर्व ध्रुवीय लोमड़ी पर किये गये अध्ययन से अनेक रोचक एवं आश्चर्यजनक तथ्य प्रकाश में आये हैं।

ध्रुवीय लोमड़ी उत्तरी ध्रुवीय प्रदेशों के बर्फ से ढके भागों में पायी जाती है। इसके कान छोटे तथा गोल होते हैं और शरीर का वजन तीन किलोग्राम से लेकर नौ किलोग्राम तक होता है। ध्रुवीय लोमड़ी की पूँछ लम्बी तथा घने बालों वाली होती है। यह एकमात्र ऐसी लोमड़ी है जिसका फर मौसम के साथ रंग बदलता है। इसके शरीर का रंग गर्मियों में धूसर होता है तथा सर्दियों में बिल्कुल सफेद हो जाता है। (यह गुण अनेक ध्रुवीय प्राणियों में देखने को मिल जाता है। इससे वे अपने शत्रुओं को धोखा देने में सफल हो जाते हैं।) कुछ लोमड़ियों के फर के बालों का सिरा ही सफेद होता है, सम्पूर्ण फर नहीं।

इसका फर बड़ा कीमती होता है तथा इसी फर के लिये इसे पाला जाता है। ध्रुवीय लोमड़ी सर्दियों में अधिक ठंड से बचने के लिए गहरी मांद में रहती है तथा अपने द्वारा किये गये शिकार का बिस्तर बनाकर सोती है। मांद के बाहर आराम करते समय यह गेंद के आकार की बन जाती है। इस समय इसकी पूँछ थूथन पर रहती है और बर्फीली हवाओं से इसकी रक्षा

करती है। यह शून्य से पैंतालिस डिग्री सेल्सियस से कम तापक्रम पर भी सरलता से रह लेती है और इतनी ठंडक के समय भी इसे शिकार खोजने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती।

ध्रुवीय लोमड़ी ध्रुवीय प्रदेश में पाये जाने वाले चूहे के आकार के एक जीव लेमिंग के शिकार पर पूरी तरह निर्भर रहती है। यदि लेमिंग की संख्या बढ़ जाती है तो इसकी संख्या भी बढ़ जाती है और यदि लेमिंग की संख्या घट जाती है तो इसकी संख्या भी घटने लगती है। लेमिंग के अतिरिक्त यह ध्रुवीय गिलहरी विभिन्न प्रकार के पक्षी और उनके अंडे तथा सालमन मछली भी बड़े शौक से खाती है। ध्रुवीय लोमड़ी अच्छी तैराक होती है तथा निर्भय होकर घंटों पानी में तैरती हैं जमीन पर रहने वाले छोटे जीवों का शिकार करते समय यह उनके बिलों का पता लगाती है और फिर अपने तेज पंजों से पूरा बिल खोद डालती है तथा अपना शिकार प्राप्त कर लेती है। यह अपने शिकार पर आक्रमण करने से पहले जमीन पर पेट के बल लेट जाती है और अपनी पूँछ दाहिने–बायें, ऊपर–नीचे पटकती है। यह ध्रुवीय भालू का काफी दूरी से पीछा करती है और उससे बचे हुए शिकार को शौक से खाती है। यह मरी हुई सील और व्हेल को भी नहीं छोड़ती और शिकार न मिलने पर इनसे अपना पेट भरती है।

ध्रुवीय लोमड़ी का फर बहुत कीमती होता है। इसे प्राप्त करने के लिये इसका इतना अधिक शिकार किया गया कि अब यह विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी है। यदि इसे बचाने के लिये शीघ्र ही कोई प्रभावशाली उपाय न किये गये तो लोमड़ी की यह दुर्लभ प्रजाति हमेशा–हमेशा के लिये डोडो और रतीय चीते की तरह विश्व से समाप्त हो जायेगी। ⋆

लम्बी दुमवाला पक्षी महालत

– परशुराम शुक्ल

महालत एक ऐसा पक्षी है जिसकी दुम उसके शरीर के आकार से भी बड़ी होती है। इसका आकार मैना के बराबर होता है। महालत के शरीर का रंग भूरा–स्लेटी तथा सिर और गर्दन का भाग भूरा–कत्थई होता है। इसकी दुम की लम्बाई एक फुट तक होती है। दुम के दोनों किनारों और सिरे का भाग काला होता है तथा बीच का भाग सफेदी लिये हुए हल्का मटमैला–सा होता है। महालत की उड़ान बड़ी आकर्षक होती हे। यह उड़ने के पहले से आवाज करता हुआ अपने पंख फड़फड़ाता है और फिर सारे पंख फैलाकर साँप की तरह लहराता है। इसके बाद उड़ जाता है। नर और मादा महालत का रूप रंग एक जैसा होता है। महालत भारत में प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। भारत में इसकी चार जातियां देखने को मिलती हैं; जिनके आकार, दुम तथा रंग रूप में थोड़ा बहुत अन्तर होता है। महालत ग्रामीण बस्तियों के निकट कम, घने झाड़ी वाले जंगलों में रहना ज्यादा पसन्द करता है। यह सामान्यतया अपने जोड़े के साथ या झुण्ड के साथ रहता है और कभी–कभी घर के आंगन में भी फुदकता हुआ आ जाता है। इसे जंगल के छोटे–छोटे शिकारी पक्षियों की टोलियों में भी उड़ते हुए देखा जा सकता है। महालत की बोली बड़ी अद्भुत होती है। यह कभी तो बड़ी तेज, कर्कश और कठोर आवाज निकालता है और कभी अत्यन्त मधुर संगीतमय आवाज निकालता है। महालत फल–फूल, कीड़े–मकोड़े, मेढक, छिपकली आदि सब कुछ खाता है। कभी–कभी इसे जंगल में पड़े हुए मृत शरीर को भी खाते हुए देखा गया है। महालत एक धूर्त पक्षी है। जब इसे कोई शिकार नहीं मिलता तो यह वृक्षों पर बने हुए चिड़ियों के घोसलों पर आक्रमण करता है और घोसलों के अंडों को खा जाता है। ⭐

गीत मधुर ये गाती है

– दीपक कुमार 'दीप'

कू–कू कू–कू करती कोयल,
गीत मधुर ये गाती है।
अपनी मीठी बोली से,
सबका मन लुभाती है।।

नहीं लगते दाम कोई,
मीठे बोल बोलने को।
कोयल हमें सिखाती है,
बोल से पहले तोलने को।।

सबसे प्यारा पक्षी कोयल,
जहाँ कहीं भी जाती है।
लगे 'दीप' मन नाचने,
वो प्रेम रस बरसाती है।।

चिड़िया

–उदय मेघवाल

चीं–चीं चहके प्यारी चिड़िया।
हरदम रहे सुखारी चिड़िया।

फुदक–फुदककर दाने चुगती,
लगती बड़ी दुलारी चिड़िया।

तिनका चुन–चुन नीड़ बनाती,
सचमुच सबसे न्यारी चिड़िया।

दूर कहीं से चुग्गा लाती,
बच्चों पर बलिहारी चिड़िया।

चाहे हो कितने भी संकट,
हिम्मत कभी न हारी चिड़िया।

नित्य हजारों पेड़ कट रहे,
कहाँ रहे बेचारी चिड़िया।

आओ हम सब पेड़ लगाएँ,
रहे मज़े प्यारी चिड़िया।

सुन्दरवन की एक सुबह

– हरजीत निषाद

सुन्दरवन के घने जंगल में तरह–तरह के पशु–पक्षी रहते थे। जंगल के बीचो–बीच बहने वाली श्यामा नदी का पानी पीकर हाथी, शेर, चीते, बन्दर, भालू सभी अपनी प्यास बुझाते थे और जंगल में उपलब्ध हरी पत्तियां और फल खाकर अपनी भूख मिटाते थे। रंग–बिरंगे पंखों वाले मोर जंगल में बादल घिर आने पर पंख फैलाकर सुन्दर नाच दिखाते तो जंगल के अन्य पशु–पक्षी भी अपने करतब दिखाने में पीछे नहीं रहते थे। कोयल पेड़ों की डाली पर बैठकर कुहु–कुहु की मीठी आवाज निकालती तो हरे रंग के तोते अपनी लाल चोंच पर इतराते हुए तेज आवाजें निकालकर सभी का ध्यान अपनी ओर खींचते थे। सुन्दरवन के जंगल में बंदरों का बहुत बड़ा समूह अपनी अलग मस्ती में रहता था और इस डाल से उस डाल पर छलांग लगाकर सभी को अचम्भे में डालने का प्रयास करता था। बन्दर कभी एक–दूसरे के सिर से जूं निकालते तो कभी अपने छोटे बच्चों को पेट के साथ चिपकाकर ऊँचे–ऊँचे पेड़ों पर तेजी से चढ़ते–उतरते नजर आते थे।

एक सुबह बन्दरों की उछल–कूद इसी तरह चल रही थी। भालू, शेर, हाथी, ऊँट, गधे और उल्लू उनके नाच–कूद का खूब आनन्द ले रहे थे। वे बन्दरों की कलाबाज़ियों को देखकर वाह–वाह कह उठते थे। केवल गबरू ऊँट ही वाह–वाह नहीं कर रहा था। जब नीलू मोर ने उससे पूछा कि क्या बात है गबरू अंकल आप चुपचाप बैठे हैं। आप खुशी नहीं प्रकट कर रहे हैं।

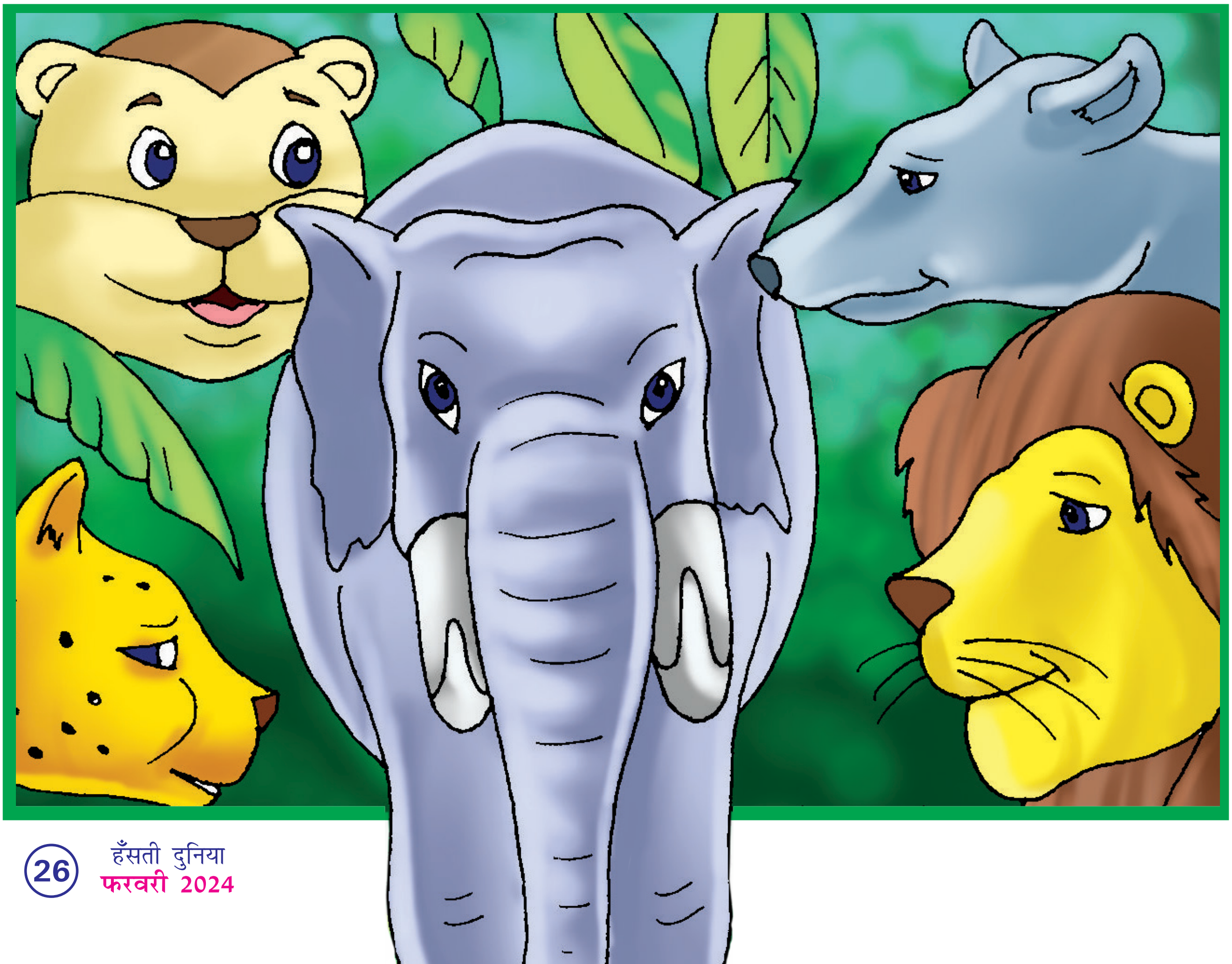

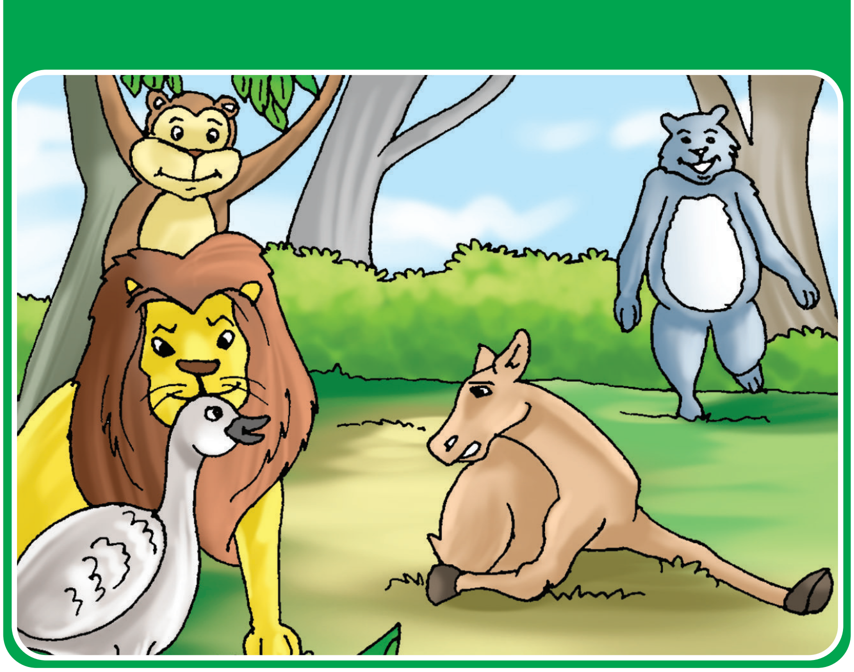

ऊँट जलन से भरा हुआ था। गाल फुलाकर आँखें मटकाता हुआ बोला– ऐसा नाचना कोई नाचना होता है। ऐसा नाच तो कोई भी कर सकता है। इसमें भला वाह–वाह करने की क्या जरूरत है। मोर और ऊँट आपस में ये बातचीत कर ही रहे थे कि बीच में अपनी टाँग अड़ाने में माहिर दीनू भालू ने कहा– गबरू अंकल, अगर आपको यह नाच इतना ही आसान लग रहा है तो क्यों नहीं आप खुद नाचकर दिखा देते। इससे हम लोग आपका सुन्दर नाच भी देख लेंगे और नीलू मोर का भ्रम भी समाप्त हो जायेगा।

इतना सुनना था कि ऊँट को जोश आ गया। उसने भी बन्दर जैसी गुलाटी लगाकर प्रयास करते हुए कमाल का नाच दिखाने की तैयारी कर ली। हाँ, हाँ मैं क्यों नहीं ऐसा कर सकता। ऐसा कहकर ऊँट ने नाचना शुरू किया लेकिन ऊँट का शरीर एक तो भारी भरकम था दूसरे उसके हाथ–पैरों में बन्दर जैसी लचक नहीं थी, इसलिए ऊँट का यह प्रयास बहुत बेढंगा लगा फिर भी अपनी शान में नाचने में लगा ही रहा। ऊँट का इस तरह का ऊट–पटांग नाच देखकर सभी को हँसी आ गई। लेकिन उन्हें उसके बेढंगे नाच पर रोना भी आ रहा था तभी शेर बोला– बंद करो यह बिना सुर–ताल का नाच, ऐसा नाच तो मैंने जीवन में कभी नहीं देखा था। तभी गैंडे की आवाज उभरी इससे अच्छा नाच तो मैं कर लेता हूँ और इतना कहकर गैंडा भी अपना भारी भरकम वजन लिये हिलने–डुलने लगा।

जंगल के पशु–पक्षी जो बन्दर के नाच पर खुश हो रहे थे। ऊँट और गैंडे के बेढंगे नाच पर 'शेम–शेम' कहकर उसे तुरन्त बन्द करने पर जोर देने लगे। तभी चिम्पाजी बोला– जिसका काम उसी को साजे, और करे तो ठेंगा बाजे।

जंगल के जानवरों की इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हर किसी की शरीर रचना और उसका बौद्धिक कौशल अलग–अलग होता है अगर गधा ज्यादा वजन उठा सकता है तो घोड़ा तेज दौड़ लगा लेता है। अगर मोर सुन्दर नाच दिखा सकता है तो कोयल मीठे स्वर में गा सकती है। अगर हाथी अपनी सूँड से पेड़ के बड़े लट्ठों को उठाकर दूर ले जा सकता है तो चिम्पाजी ऊँचे पेड़ों पर हैरत में डालने वाली कलाबाजियां कर सकता है जिसको जो काम अच्छी तरह करना आता है उसको उसमें दक्षता हासिल करनी चाहिए अन्यथा समय भी व्यर्थ जाता है और वह हँसी का पात्र भी बनता है। ✯

मासूम और खूबसूरत प्राणी खरगोश

— कैलाश जैन

खरगोश एक नाजुक, मासूम और निहायत खूबसूरत प्राणी है। सफेद–झक और मुलायम बालों वाला यह जानवर बरबस किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

शारीरिक संरचना की दृष्टि से सामान्य खरगोश की लम्बाई 18 से 20 इंच तक होती है। इसकी आँखें भूरी व नीली होती हैं। शरीर के अनुपात में इसके कान काफी लम्बे होते हैं। वस्तुतः बड़े और संवेदनशील कान खरगोश को आत्मरक्षा के वास्ते एक प्रकृति–प्रदत्त उपहार है। चूंकि खरगोश एक कमजोर और बाहरी शत्रुओं से अपनी रक्षा कर पाने में असमर्थ प्राणी है, इस कारण बड़े कानों के अधिक क्षेत्रफल की वजह से यह अत्यन्त मद्धम आवाज से उत्पन्न हुई ध्वनि तरंगों को भी सरलता से ग्रहण कर लेता है और कुलाचें भरकर अपनी रक्षा कर लेता है। तीव्र श्रवण–शक्ति के अतिरिक्त दूर तक देख पाने की क्षमता और सूंघने की तीव्र व अद्भुत शक्ति भी इसकी आत्मरक्षा में मददगार होती है। काफी दूर से यह अपने शत्रुओं की गंध पकड़ लेता है और बचाव में भागकर उनकी पहुँच से बाहर हो जाता है।

खरगोश की पिछली टांगे अगली टांगों की अपेक्षा अधिक बड़ी होती हैं। अपनी इन्हीं टांगों के बल पर कुलाचें भरकर दौड़ना इसका प्रिय शौक है। संकट के समय यह लगभग 65 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से दौड़ सकता है। अपने शत्रु से रक्षा करने के लिए भागता हुआ खरगोश कभी एक दिशा में नहीं दौड़ता, बल्कि भागते हुए दिशा–परिवर्तन कर अपना पीछा कर रहे शत्रु को चकमा देने की कला में खरगोश को महारत हासिल है। भागते–भागते अचानक दिशा बदलकर किसी झाड़ी, बिल या खोह में गायब हुए खरगोश को उसका शिकारी हतप्रभ देखता रह जाता है। जमीन पर बचाव के द्वार बंद हो जाने पर यह पानी में भी छलांग लगाने से नहीं झिझकता।

खानपान के मामले में खरगोश एक शुद्ध शाकाहारी प्राणी है। इसका मुख्य भोजन हरी दूब, घास, नर्म पौधे, सब्जियां, फल, चने आदि हैं। इसके मुँह में दो दंत पंक्तियां होती हैं जिनकी मदद से यह अपना भोजन कुतर–कुतरकर करता है। गाजर, मूली, शकरकंद आदि की जड़ें व छिलके इसका प्रिय भोजन है। यह खेतों में खड़ी हरी सब्जियों और फलों को खाता रहता है। इस कारण किसान लोग इसे अपना दोस्त नहीं मानते।

यह आमतौर पर समूह–प्रेमी जीव है जो एक बड़े झुण्ड के रूप में रहना पसन्द करता है। ये भोजन की तलाश में प्रायः सांझ ढले या मुँह अंधेरे निकलता है। शेष समय यह घनी झाड़ियों या लम्बी घास में छुपे रहते हैं।

इतनी विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी खरगोश की प्रजाति पर्याप्त रूप से फल–फूल रही है। इसकी पृष्ठभूमि में खरगोश की अद्‌भुत व तीव्र प्रजनन क्षमता हैं मादा खरगोश केवल छः माह की आयु में बच्चे उत्पन्न करने लगती है तथा एक वर्ष में यह तीन या चार बार गर्भ धारण करती है। एक बार में मादा खरगोश पाँच–छह बच्चों को जन्म देती है। खरगोश की औसत आयु सात से आठ वर्ष होती है।

उत्खनन से प्राप्त जीवाश्म के आधार पर प्राणी–शास्त्री उत्तरी अमेरिका को खरगोश का जन्म स्थान मानते हैं। अब तक इनकी तकरीबन 50 से 55 प्रजातियों की पहचान की जा सकी है। इनमें सखा, खरहा, अंगोरा, फ्लेमिश, जाएंट आदि मुख्य हैं।

खरगोश की सभी प्रजातियों में सबसे कम वजन के छोटे खरगोश नीदरलैंड तथा पोलैंड में पाये जाते हैं। इन वयस्क खरगोशों का वजन 900 ग्राम से 1200 ग्राम तक होता है। 'फ्लेमिश' व 'जाएंट' प्रजाति के खरगोश आकार व वजन में सबसे बड़े होते हैं। इनका औसतन वजन सात से साढ़े आठ किलोग्राम तक पाया जाता है।

अंगोरा प्रजाति के खरगोशों से बेशकीमती ऊन पाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि अंगोरा खरगोश की उत्पत्ति तुर्की में हुई। जर्मनी में अंगोरा खरगोश से ऊन प्राप्त करने के लिए एक बड़ी परियोजना के तहत आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से खरगोश–पालन का कार्य किया जाता है। ⭑

नगाड़ों की आवाज़

— कमल सोगानी

जूनागढ़ के एक बादशाह के पास सफेद हाथी था। बादशाह जब भी शिकार पर जाते, इसी पर बैठकर जाया करते। यह हाथी अपनी सूँड से रास्ते में मिलने वाले हिंसक पशुओं को घायल कर देता। हाँ, घायल तब ही करता, जब वह पशु उस पर आक्रमण करता। अन्यथा वह अपनी मस्त और मतवाली चाल में चलता रहता था।

एक बार ऐसे ही बादशाह जंगल में शिकार ढूँढ रहे थे, तभी घात लगाकर बैठे तीन शेरों ने मिलकर हाथी को आस–पास से घेर लिया। हाथी पर आसीन बादशाह शेरों के खतरनाक इरादे देखकर ऊपर से भाले चलाने लगा। लेकिन एक–एक करके उसके हाथों से दोनों भाले जमीन में गिर पड़े। बादशाह घबरा उठा। मौत सामने दिखाई दे रही थी। तभी बादशाह ने हाथी के कान में कहा– गजराज जी, कुछ उपाय करो, इन शेरों से संघर्ष करो...!

अपने स्वामी के मुख से ऐसी बात सुनते ही हाथी का मनोबल जाग गया। उसने अपनी सूँड और लातों से तीनों शेरों को बुरी तरह जख्मी कर दिया और फिर आगे बढ़ने लगा। लेकिन अब बादशाह ने शिकार करना उचित न समझा और अपने महल में लौट आया...!!

दूसरे दिन भरे दरबार में बादशाह ने अपने हाथी की बहादुरी का किस्सा सुनाया तो सभी दाँतों तले अंगुली दबाने लगे। अब बादशाह ने इस हाथी को एक नाम दिया– योद्धा। इसकी देखभाल के लिए

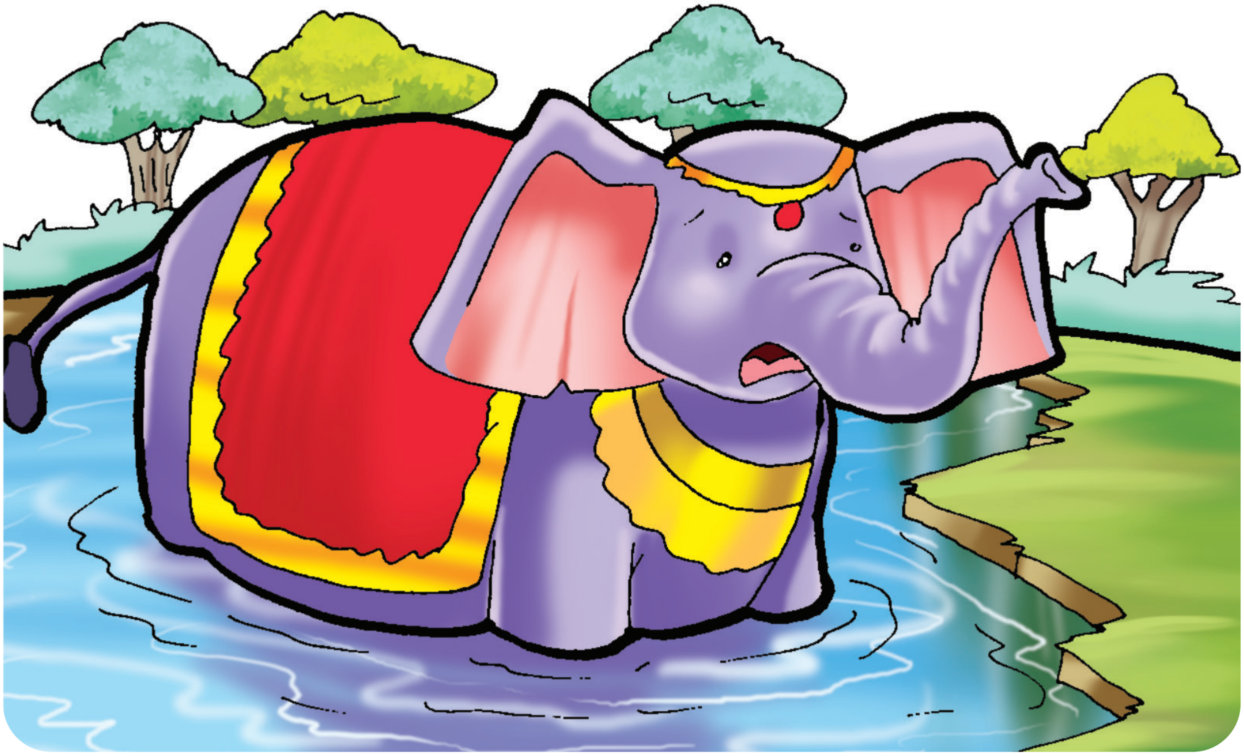

चार कर्मचारी अलग से तैनात किये। समय–समय पर हाथी को उसकी पसंदीदा खुराक दी जाने लगी।

बादशाह ने इसी हाथी पर सवार होकर दो युद्ध भी लड़े। दोनों में ही उसकी विजय हुई।

समय गुजरने के साथ हाथी भी बूढ़ा हो गया। इस कारण बादशाह ने इसे युद्ध में ले जाना बंद कर दिया, किन्तु उसका हाथी के प्रति प्रेम यथावत रहा।

एक दिन वह तालाब में पानी पी रहा था। तालाब में पानी कम था, इसलिए तालाब के मध्य में पहुँचा लेकिन अचानक दलदल में फँस गया। वृद्धावस्था के कारण हाथी अपने शरीर को दलदल से बाहर निकालने में अक्षम था। वह मदद के लिए जोर–जोर से चिंघाड़ने लगा। उसकी चिंघाड़ सुनकर लोग उसकी ओर दौड़ पड़े, किन्तु तालाब से उसे निकालने में वे भी लाचार थे। तब उन्होंने उसके शरीर में भाले चुभाने शुरू किए ताकि उसकी तीखी चुभन से वह अपनी समूची ताकत लगाकर बाहर निकल सके। लेकिन ये प्रयास भी असफल रहा, वह नहीं निकल पाया।

दलदल में हाथी के फँसने का समाचार बादशाह तक पहुँचा, तो वह तत्काल अपने सबसे बुजुर्ग और अनुभवी महावत को लेकर आया। महावत ने बादशाह को सलाह दी कि तत्काल युद्ध के नगाड़े जोर–जोर से बजवाइए और सैनिकों की कतार हाथी के सामने खड़ी कर दीजिए।

बादशाह ने ऐसा ही किया। नगाड़ों की आवाज़ और सैनिकों की कतार देख हाथी में ऊर्जा का संचार हुआ और वह तुरन्त दलदल से बाहर निकल आया।

अपने बुजुर्ग अनुभवी महावत की तरकीब कामयाब देखकर बादशाह ने महावत को पुरस्कार दिया और उससे पूछा– "लेकिन यह संभव कैसे हुआ?"

महावत बोला– "सरकार! मनोबल जाग्रत होते ही सफलता मिलने में देर नहीं लगती।" ☆

शत्रु को चकमा देने में माहिर होते हैं हंस

– कमल सोगानी

सफेद हंस से तो आप परिचित होंगे ही, लेकिन आपको जानकर अचरज होगा कि ऑस्ट्रेलिया की तटवर्ती झीलों में अनोखे हंस पाये जाते हैं जिनका वर्ण काला होता है।

ऑस्ट्रेलिया में काले हंस को 'कोट ऑफ आर्म्स' का प्रतीक माना जाता है। उत्तरी गोलार्द्ध में पाये जाने वाले सफेद हंसों की तरह काले हंस भी अच्छे तैराक हैं और छोटे–छोटे द्वीपों की घनी घास में अपने अंडे देते हैं। इनका घोंसला टहनी और तिनकों के ढेर में बना एक खोखला–सा होता है। जिसमें वे अंडों को रखते हैं। अगस्त और दिसम्बर के मध्य में वे इन अंडों को सेते हैं। इन दिनों वहाँ बसन्त ऋतु का मौसम होता है। अंडे से निकला चूजा स्लेटी रंग का होता है और उसके शरीर पर कोमल पंख होते हैं। ये कुछ ही घंटों में तैरना सीख जाते हैं। अपनी माँ की चोंच में दबे कीड़ों पर चूजे टूट पड़ते हैं। जब माँ प्रकृति की हसीनवादियों में सैर करने के लिए निकलती है तो चूजे भी बाहर की दुनिया देखने के लिए उसकी पीठ पर सवार हो जाते हैं।

काले हंस अक्सर समूह में रहते हैं। पानी की सतह पर तैरते हुए कई तरह की कलाबाजियाँ प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में उनकी कलापूर्ण किलकारियाँ मन को छू जाती हैं।

इनका मुख्य भोजन पानी के जीव हैं। इसके अतिरिक्त ये शैवाल, जंगली फल, फूलों का रस भी अपने भोजन में शामिल करते हैं।

ये तैराकी के वक्त कई तरह की छोटी–छोटी उड़ान भरते हैं। पानी में गोता लगाते हैं। कभी–कभी सिर्फ गर्दन ही पानी के बाहर दिखाते हैं व धड़ पानी में छिपा लेते हैं। शत्रु पीछे लगने पर ये तैराकी करते–करते उड़ने लगते हैं और ऐसी जगह जा छिपते हैं जहाँ घने पेड़ों की काली–काली शाखाएँ होती हैं। ऐसे में कोई शत्रु इन्हें पहचान नहीं पाता। यूँ ये शत्रु को चकमा देने में बड़े माहिर होते हैं।

ये मौसम के ज्ञाता भी होते हैं। आने वाली प्राकृतिक आपदाओं को ये पूर्व में ही भांप लेते हैं और अपने समूह में गुपचुप चर्चा करके शान्त वातावरण की ओर उड़ान भर लेते हैं।

हंस का जोड़ा जीवन भर हँसी–खुशी रहता है। अपना साथी बिछुड़ने पर यह फिर नया साथी नहीं बनाता बल्कि उसी के गम और यादों में अपने जीवन का सफर व्यतीत कर लेता है।

ये हंस एकता के प्रतीक भी हैं। किसी भी हंस पर हमला होने पर अन्य हंस तुरन्त पहुँचकर उसे यथासम्भव बचाने का भरपूर प्रयास करते हैं।

17वीं शताब्दी तक काले हंस की कुछ प्रजातियाँ हिमाचल की नम वादियों में भी दिखाई देती थीं लेकिन उसके बाद ये अचानक लुप्त हो गईं और ऑस्ट्रेलिया में दिखाई देने लगीं। ★

अच्छा लगता है

– भानुदत्त त्रिपाठी

भोर–सबेरे ही उठ जाना अच्छा लगता है।
उठकर प्रभु को शीश झुकाना अच्छा लगता है।
दादा–दादी, मम्मी–पापा मुझको प्यारे हैं,
उनके चरणों में झुक जाना अच्छा लगता है।।

गर्मी–वर्षा या फिर सर्दी चाहे जो भी हो,
ताजे जल से नित्य नहाना अच्छा लगता है।
समय बड़ा अनमोल, समय का सब सम्मान करें,
सदा समय से शाला जाना अच्छा लगता है।।

मेरे शिक्षक बड़े प्रेम से सदा पढ़ाते हैं,
उनसे आदरभाव निभाना अच्छा लगता है।
मेरी बहना का क्या कहना, मुझ से छोटी है,
लिखना–पढ़ना उसे सिखाना अच्छा लगता है।।

खेल–कूद में भी मैं सबसे आगे रहता हूँ,
मुझको सबसे हाथ मिलाना अच्छा लगता है।
दुःख हो सुख हो फूल कभी परवाह नहीं करते,
मुझको फूलों–सा मुस्काना अच्छा लगता है।।

मैं मोहन का भाई, सोहन लोग मुझे कहते,
मुझे उचित कर्तव्य निभाना अच्छा लगता है।
मुँह न मोड़ता कभी पढ़ाई से मैं जीवन में,
इम्तिहान में अव्वल आना अच्छा लगता है।।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

बच्चों, क्या आप जानते हो कि सभी प्राणी ऑक्सीजन के बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकते हैं।
पेड़–पौधे हमारे बहुत काम आते हैं फिर भी लोग उन्हें अपने निजी उपयोग के लिए काट रहे हैं।
पेड़ों की कमी के कारण हमारा वातावरण दिन–ब–दिन प्रदूषित हो रहा है और इसी वजह से 'ग्लोबल वार्मिंग' लगातार बढ़ती जा रही है।

यही नहीं, इस वजह से जंगली जानवरों का निवास स्थान भी कम होता जा रहा है और वे हमारे रहने के स्थानों में घुस रहे हैं।
जंगली जानवर भी इसी प्रकृति का हिस्सा हैं। फिर उन्हें इस तरह से क्यों परेशान किया जा रहा है।
मैम, आप बिल्कुल सही कह रही हैं।

हम सबको पेड़ लगाने चाहिए। हमें उन्हें काटने पर रोक लगानी चाहिए।
मैम, मैंने पिछले हफ्ते ही पौधे लगाए थे।
बहुत अच्छा किट्टी, अगर हम पेड़ों को बचा पाएँगे तभी हम अपने भविष्य को सुरक्षित कर पाएँगे।

प्रवासी पक्षियों का स्वागत
अतिथि देवो भव

– गोपाल जी गुप्त

भारतीय संस्कृति में अतिथियों को देवता के समान मानते हुए उनका स्वागत किया जाता है। वैसे अतिथि के रूप में हम केवल अपने घर आने वालों का ही स्वागत करते हैं किन्तु भारत के जंगलों, पक्षीविहारों, अभयारण्यों में दूर–दराज से आने वाले अतिथियों (पक्षियों) के स्वागत की बात सुनकर हो सकता है आश्चर्यजनक लगे पर यह सच है कि प्रतिवर्ष शरद ऋतु में विश्व के विभिन्न देशों से अनगिनत पक्षी लगभग 6 महीनों के लिए हमारे देश में अतिथि के रूप में आते हैं और सारा जंगल उनका स्वागत करता है।

वास्तव में भारत के उत्तर में स्थित ठंडे देशों से प्रतिवर्ष हजारों–लाखों की संख्या में परिन्दे वहाँ की कड़ाके की ठंड से बचने के लिए हजारों मील की यात्रा कर शरद ऋतु के प्रारम्भ में (अक्टूबर–नवम्बर के महीने में) भारत आते हैं और बसन्त ऋतु में मूल स्थान को वापस लौट जाते हैं। समूहों, दलों में आने वाले परिन्दों में खंजन, सारस, चक्रवाह, जंगली बतखें, गौरैया, पपीहा, फुदकी, गुलाबी मैना, धोबिन पक्षी, स्वर्णचूड़ आदि न जाने कितनी जातियों–उपजातियों के छोटे–बड़े परिन्दे होते हैं। इनमें से कुछ पहाड़ों को लाँघते हुए, कुछ सागरों–महासागरों को पार करते हुए, कुछ साइबेरिया की बैकाल झील से, कुछ अरब सागर के मध्य से यहाँ आते हैं। ये भारत में इतना समय बिताते हैं कि ऐसा हमें लगता ही नहीं कि वे प्रवासी हैं, परदेसी हैं बल्कि वे हमें अपने ही देश के मालूम होते हैं। इन सभी के बारे में इस छोटे से लेख में लिखना सम्भव नहीं है। इस समय हम केवल खंजन, सारस और चक्रवाक का ही जिक्र कर रहे हैं।

खंजन : किसी की आँखों की सुन्दरता का वर्णन करते हुए हिन्दी के कविगण आँख की उपमा खंजन की आँख से देते हैं और इसी से तुलना करते हैं। सचमुच खंजन की आँख होती ही इतनी सुन्दर है। खंजन को अंग्रेजी भाषा में वैगटेल (Wagtail) कहा

जाता है। इसकी तीन प्रजातियाँ– श्वेत, श्याम तथा पीत या गोपीत हैं तथा कई उपजातियाँ होती हैं।

श्वेत खंजन : लगभग 20 सेंटीमीटर लम्बे श्वेत खंजन पानी के पास दल बनाकर रहते हैं। नर खंजन के सिर पर काले धब्बे होते हैं जो सीने पर चन्द्रमा के आकार में दिखते हैं। ये सफेद रंग के होते हैं तथा पंख काले रंग के जिन पर सफेदी लिए भूरे रंग की किनारी होती है। मादा का रंग नर से हल्का होता है पर उसके सिर पर धब्बे नहीं होते। नर–मादा दोनों के चोंच तथा पाँव चटख काले रंग के होते हैं। ये तेजी से दौड़ते हैं और दौड़ते हुए इनकी दुमनुमा पूँछ उठती–गिरती रहती है।

इनकी केवल एक उपजाति हिमालय तथा कश्मीर के ऊँचे शिखर पर अंडे देकर प्रवास हेतु आती है। कुछ उपजाति चीन तथा पूर्वी साइबेरिया में अंडे देकर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, सोनभद्र से लेकर आसाम तथा नेपाल के जंगलों में प्रवास करती है। इसकी कुछ उपजाति ईरान, अफगानिस्तान, तुर्कीस्तान में अंडे देने के बाद अगस्त–सितम्बर में दक्षिण भारत के बेलगाँव से कोलकाता में मई तक प्रवास करने आती है। तीसरी उपजाति पश्चिमी साइबेरिया, यूराल पर्वत श्रृंखलाओं में अंडे देने के बाद अक्टूबर तक त्रावणकोर में आकर अप्रैल तक प्रवास करती है।

श्याम खंजन : इसकी लम्बाई 18 से 20 सेंटीमीटर तक होती है। ये प्रायः अकेले ही जल के नजदीक रहती हैं। इसके शरीर का ऊपरी हिस्सा नीला–भूरा, निचला हिस्सा पीला, पंख गहरा भूरा, कंठ तथा गर्दन का अगला हिस्सा सफेद, दुम लम्बी–पतली पीलापन लिए हरे रंग के धब्बे वाली होती है। इसकी अनेक उपजातियों में से केवल एक प्रशान्त महासागर के पास तथा हिमालय की उत्तरी श्रृंखलाओं पर अंडे देने के बाद पूरे भारत में अक्टूबर से अप्रैल तक प्रवास करती है।

पीत खंजन : अधिकतम 18 सेंटीमीटर लम्बे पीत खंजन के शरीर का ऊपरी भाग हरा तथा निचला भाग पीला होता है। सिर का ऊपरी भाग थोड़ा भूरा, चोंच हल्का काला–भूरा, पैर भी हल्का काला–भूरा होता है। इसकी एक उपजाति साइबेरिया के पश्चिमी हिस्से में अंडे देकर बेलगाँव से कोलकाता के बीच सितम्बर से मई तक प्रवास करती है। ⭑

क्रौंच या सारस : लम्बी गर्दन, लम्बी टांग तथा एक टांग से नदी तालाब के जल में ध्यानमग्न मुद्रा में खड़े मछली का शिकार करने वाले सारस को अंग्रेजी में क्रेन (Crane) तथा संस्कृत में क्रौंच कहते हैं। ये बड़े ही अनुशासनप्रिय होते हैं तथा दल नेता के पीछे एक पंक्ति के रूप में अंग्रेजी की वी (v) के आकार में उड़ते हुए भारत आकर अक्टूबर से मार्च तक प्रवास करते हैं।

इनकी अनेक प्रजातियों में से मात्र तीन– स्वर क्रौंच (सारस) प्राच्य क्रौंच (विलायती सारस) तथा साइबेरियन सारस ही भारत आते हैं। इनमें से साइबेरियन सारस तो केवल भरतपुर में प्रवास करता है जबकि शेष दोनों पूरे भारत में प्रवास करते हैं।

धूसर रंग वाले विलायती सारस के सिर तथा शरीर पर आकर्षक काले रंग के धब्बे होते हैं। गर्दन का पिछला हिस्सा हल्के लाल रंग के धुंधले धब्बे से सुन्दर लगता है जबकि नीचे वाला हिस्सा काले रंग का होता है। काले रंग वाले इसके पंख लटकते रहते हैं। आँख के पास सफेद मुलायम पर की कलगी होती है। ये दल बनाकर रहते हैं तथा कुर्र–कुर्र की आवाज़ करते रहते हैं।

साइबेरियन सारस लगभग 4500 किलोमीटर की यात्रा करके भारत में भरतपुर (राजस्थान) के घना अभयारण्य में नवम्बर के प्रारम्भ में आकर फरवरी–मार्च तक प्रवास करते हैं। यहीं अंडे देकर परिवार बढ़ाते हैं तथा शावकों के साथ वापस लौट जाते हैं। लगभग एक मीटर ऊँचे साइबेरियन सारस एकदम सफेद रंग वाले होते हैं। इनकी गर्दन काफी पतली, लम्बी पतली टांग तथा चोंच लाल रंग की होती है। शरीर बोझिल होता है। जब ये उड़ते हैं तब इनके पंख के अन्त में काली पट्टियां दिखती हैं। ये जोड़े में रहते हैं। इनकी संख्या में निरन्तर गिरावट आती जा रही है।

चक्रवाक (चकवा–चकवी) : नारंगी, भूरे रंग के शरीर तथा पंख (जिसका किनारा सफेद लिए होता है।) चमकीला भूरा पेट, काली चोंच, पैर के दंड तथा काली पूँछ सिर तथा गर्दन मटमैला, काली पीठ वाला चक्रवाक पक्षी कुशल तैराक होने के बावजूद पानी से दूर रहते हैं। पर निवास जल के पास ही करते हैं। नर–मादा दिनभर आराम करते हैं पर रात में दाना–पानी की खोज में निकल पड़ते हैं। ये मध्य एशिया, चीन, जापान, रूस आदि से वहीं पर अंडे देने के बाद अक्टूबर तक भारत आते हैं तथा मई के शुरुआत में यहाँ से वापस लौटते हैं।

प्रवास यात्रा : परिन्दों की प्रवास यात्राएँ विचित्र और रहस्यपूर्ण होती हैं। ये समय के इतने पाबंद होते हैं कि इनके आने–जाने की ठीक–ठीक गणना तक की जा सकती है। इन परिन्दों को अपने मूल स्थान से भारत तक आने में, लम्बी दूरी तय करने में, न केवल काफी कष्ट सहना होता है बल्कि अनेक खतरों का भी अक्सर सामना करना पड़ता है। जंगलों, मैदानों, पहाड़ों, सागरों के ऊपर से गुजरना पड़ता है। कभी भयंकर तूफानों का सामना करना होता है। कभी वे मार्ग तक भटक जाते हैं। ये पूरी गति से नहीं उड़ते। प्रायः इनकी उड़ान की गति 50–65 कि.मी. प्रतिघंटा होती है परन्तु छोटे परिन्दे 45 कि.मी. की गति से अधिक तेज नहीं उड़ पाते। कुछ परिन्दे रुक–रुककर यात्रा करते हैं। कुछ बिना रुके, कुछ केवल दिन में उड़ते हैं कुछ दिन–रात दोनों में। इनके आने–जाने के मार्ग भी भिन्न–भिन्न होते हैं। भारत आने का मुख्य मार्ग हिमालय के उत्तर पश्चिमी और उत्तर पूर्वी दर्रों में से होता है। तूतीहार (Woodcock) शायद बिना रुके यात्रा करती है। मध्य एशिया तथा साइबेरिया से आने वाली जंगली बतखें हिमालय के ऊपर से 3200–5000 कि.मी. की यात्रा करके आती है। इसी तरह फुदकी (Warbler) लगभग 3500 कि.मी. यात्रा करके आती है। यात्रा में कुछ परिन्दों की जान तक चली जाती है। बावजूद इसके कड़ी ठंड तथा आहार की कमी उन्हें प्रवास यात्रा करने को मजबूर करती है। ☆

पढ़ो और हँसो

एक दिन रामू बाजार गया। रास्ते में एक चोर उसका मोबाइल छीनकर भाग गया। पहले तो रामू उसके पीछे भागा, लेकिन थोड़ी दूर बाद रुक गया और जोर से चिल्लाया– ले जा, ले जा... इसका चार्जर तो मेरे पास ही है।

विमान चला रहा पायलट जोर–जोर से हँसने लगा और जहाज डगमगाने लगा तो यात्रियों ने उससे पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा है?

पायलट बोला– मैं यह सोचकर हँस रहा हूँ कि जब पागलखाने वालों को पता लगेगा कि मैं भाग गया हूँ तो उनकी हालत क्या होगी?

मम्मी : सुशील, आज जो पकौड़े हमने खाए हैं उनके बारे में अपने पापा को न बताना।

सुशील : मम्मी, नहीं बताऊँगा। अब देखो न मैं और पापा कई बार बाजार जाकर आइसक्रीम खाते हैं। क्या मैंने कभी इस बारे में आपको बताया है?

रामू : कल रात हमारे घर में चोर घुस आए और नकदी, जेवर वगैरह सब कुछ ले गए।

मित्र : लेकिन तुम तो हमेशा अपने साथ पिस्तौल रखते हो?

रामू : अरे गनीमत समझो कि चोरों की नजर उस पर नहीं पड़ी, वरना उससे भी हाथ धोना पड़ता।

नौकर : (मालिक से) मालिक आपको मुझ पर विश्वास नहीं है?

मालिक : अरे! मैं तुझ पर विश्वास नहीं करता तो तुझे तिजोरी की चाबियाँ कभी नहीं देता।

नौकर : पर मालिक! उनमें से तो तिजोरी के एक भी चाबी नहीं लगती।

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं आइसक्रीम खाऊँगी।

अमन : गुड़िया सर्दी में आइसक्रीम नहीं खाते।

गुड़िया : भैया, मैं आइसक्रीम गर्म करके खा लूँगी।

अध्यापक : (छात्र से) भाईचारे का वाक्य में प्रयोग करो।

छात्र : मैंने दूधवाले से पूछा कि दूध इतना महँगा क्यों बेचते हो भाई? तो वह बोला– भाई चारा जो महँगा हो गया है।

माधुरी : चलो सीमा तैरने चलें।

सीमा : माधुरी मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक मैं तैरना न सीख लूँगी, पानी के पास तक नहीं जाऊँगी।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

एक व्यक्ति अपने दोस्त से बोला– कोई ऐसी चीज बताओ जो ब्रेकफास्ट में नहीं खायी जा सकती।

दोस्त : 'एक' क्या मैं 'दो' बताता हूँ।

व्यक्ति : ठीक है, दो बताओ।

दोस्त : 'लंच' और 'डिनर'।

शिक्षिका : राहुल बताओ, हाथी की क्या पहचान होती है?

राहुल : मैडम जी, हाथी की दो पूँछ होती है एक आगे और एक पीछे।

डायरेक्टर ने एक्टर से कहा– सिर्फ मुस्कुराइए नहीं, दाँत भी बाहर निकालिए।

एक्टर ने फौरन अपने नकली दाँत बाहर निकाल दिए।

सेठ : (नौकर से) मैं एक घंटे से घंटी बजा रहा हूँ। तुम्हें सुनाई नहीं दिया?

नौकर : आप मालिक हो आप एक घंटा क्या पूरा दिन बजा सकते हो।

चिंटू : मिंटू, जरा अपनी साइकिल आज मुझे देना।

मिंटू : नहीं।

चिंटू : अगर मुझे साइकिल नहीं दोगे तो मेरा दिल खट्टा हो जाएगा।

मिंटू ने झट से बोला– तो चीनी खा लेना।

ट्रेन में पिंटू और टिंकू सफर कर रहे थे।

पिंटू : 'व्हाट्सएप' इन्सान को हमेशा आगे बढ़ाता है।

टिंकू : वो कैसे?

पिंटू : अब मुझे ही देखिए, दो स्टेशन पीछे उतरना था लेकिन मैं तो आगे आ गया।

सास : (बहू से) तुम्हारी योग्यता क्या है?

बहू : नेत्र नेत्र चाय।

सास : क्या मतलब?

बहू : आईआईटी।

टीचर : तुम देर से क्यों आए?

स्टूडेंट : सड़क पर लगे बोर्ड के कारण।

टीचर : कैसे बोर्ड के कारण?

स्टूडेंट : जिस पर लिखा है– 'आगे स्कूल है धीरे चलें।'

सोनू : लो, लाइट चली गई।

मोनू : लाइट चली गई तो क्या... पंखा तो चालू कर।

सोनू : लो, कर दी न पगलों वाली बात, अगर पंखा चालू किया तो मोमबत्ती बुझ नहीं जाएगी?

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

बेगाना दुःख–अपना दुःख

–दर्शन सिंह आशट

किसी किसान के खेत में आम के पेड़ पर एक तोता रहता था, बेहद शरारती। उसी आम के पेड़ पर एक गिलहरी भी रहती थी। अत्यन्त विनम्र स्वभाव था उसका। हमेशा दूसरों की मदद करती।

जब कोई व्यक्ति थका–हारा आम के पेड़ के नीचे कुछ समय आराम करने के लिए बैठता तो तोता एक छोटा–सा आम तोड़कर आराम कर रहे व्यक्ति के सिर पर मारता। घबराकर वह व्यक्ति एकदम ऊपर देखता, तोता खुश होकर 'टैं टैं' करने लगता।

एक दिन एक कछुआ आम के पेड़ के नीचे से गुजर रहा था तो तोते ने उसको अपना निशाना बनाया। ज्यों ही एक आम कछुए की पीठ से जोर से टकराया तो मारे भय के कछुआ एकदम पीछे की तरफ भागने लगा। तोता ठहाके लगाने लगा।

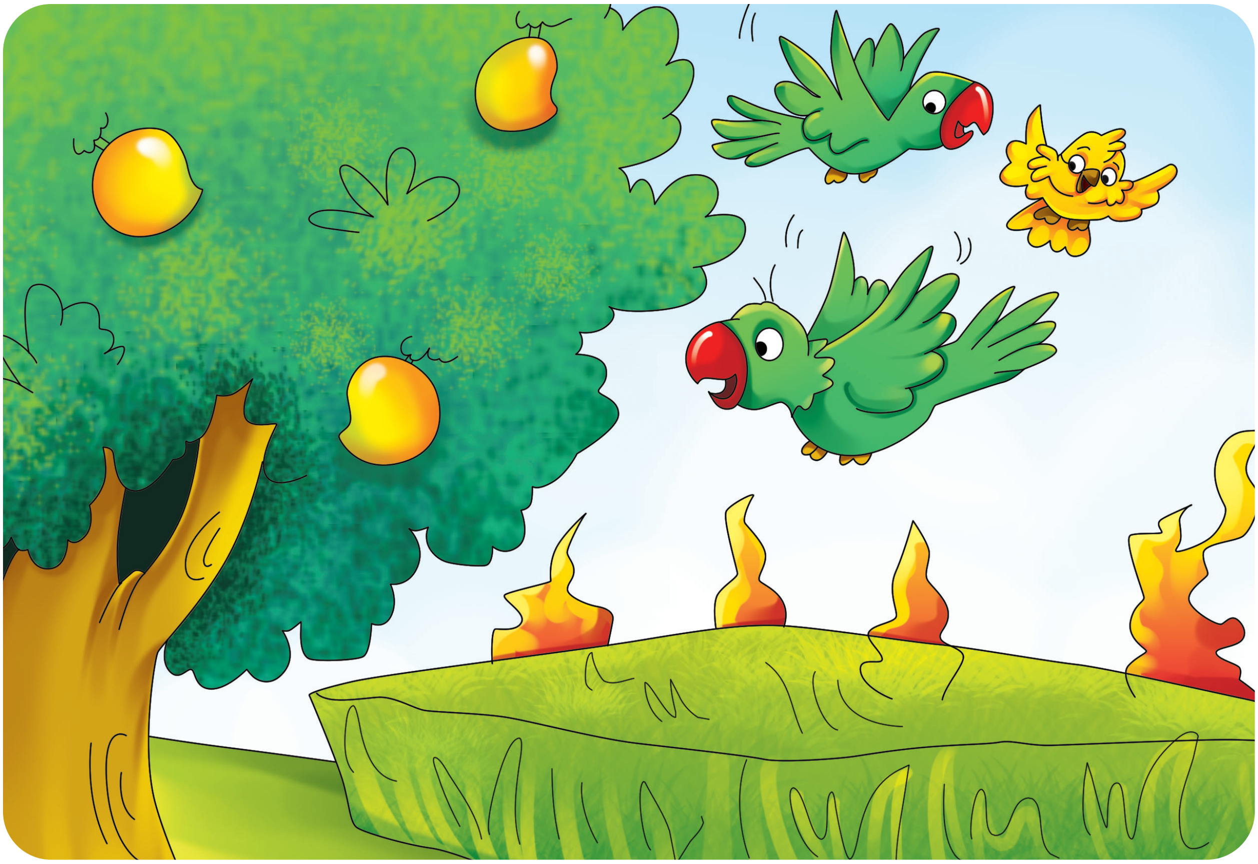

—देखो तोते भैया, किसी को ऐसे तंग व परेशान करना समझदारी की बात नहीं।— एक दिन जब एक बीमार व्यक्ति को तोते ने अपना निशाना बनाया तो गिलहरी से रहा न गया। उसने जैसे ही कुछ कहने को मुँह खोला तोता एकदम बोल पड़ा— बस! बस! अपना लैक्चर अपने पास ही रखो।

—जानते हो, जिस पेड़ पर हम रह रहे हैं उसको किसी आदमी ने ही बोया है। एक तुम हो कि एक बीमार आदमी को पेड़ के नीचे सोने तक नहीं दिया?— गिलहरी बोली।

तोता अंट—शंट बोलने लगा तो गिलहरी चुप हो गई। वह आम का पेड़ छोड़कर पास के ही एक अन्य पेड़ की खोह में रहने लगी।

कुछ दिनों के पश्चात् एक तोती भी आम के पेड़ पर रहने लगी। तोता किसी को परेशान कर रहा होता तो तोती उसे मना करती। लेकिन तोता कब किसी की बात मानने वाला था?

कुछ दिनों बाद तोती ने दो अंडे दिए। उनमें से प्यारे—प्यारे बच्चे भी निकल आए।

फसल पक चुकी थी। किसान ने सारी फसल काटकर आम के पेड़ के बिल्कुल समीप ही एक बड़ा ढेर लगा दिया। एक सुबह किसान का नौकर फसल के ढेर के पास ही बैठा चाय बना रहा थां अचानक हवा के तेज झोंके से एक दहकती हुई चिंगारी सूखी फसल के ढेर पर जा गिरी और देखते ही देखते ढेर को आग लग गई।

आम के पेड़ पर रहने वाले पक्षी जान बचाने के लिए इधर—उधर उड़ते हुए चीख पुकार करने लगे। तोते और तोती का तो बुरा हाल था। उनके

बच्चे उड़ नहीं सकते थे और न ही तोता–तोती उन्हें मुँह में उठाकर ले जा सकते थे।

तब तक गिलहरी भी पक्षियों का कौतूहल सुनकर बाहर आ चुकी थी। आग की लपटें पल–पल ऊँची उठ रही थीं।

गिलहरी यह देखते ही तेजी से अपनी खोह में आई और एक लम्बा–सा फटा हुआ कपड़ा लाई। इसमें एक जेब भी लगी हुई थी। इस कपड़े को वह खेत से उठाकर लाई थी ताकि अपनी खोह को और भी सुखद और आरामदायक बना सके।

इससे पहले कि लपटें और तेज होती गिलहरी एक टहनी से दूसरी पर लम्बी छलांगें लगाती हुई आम के पेड़ पर आई और तोते की खोह में जाकर दोनों बच्चों को कपड़े की जेब में डाल लिया। फिर कपड़े को अच्छी तरह अपने मुँह में पकड़कर पहले की तरह एक से दूसरी टहनी पर छलांगें लगाती हुई बच्चों को सुरक्षित स्थान पर ले आई लेकिन आँच से वह घबरा गई थी। ज्योंही उसने बच्चों को अपनी खोह में रखा तो वह स्वयं बेहोश हो गई।

तोते और तोती ने अपने बच्चों को सुरक्षित पाया तो उनकी जान में जान आ गई लेकिन साथ ही वे बेहोश गिलहरी को होश में लाने के प्रयत्न करने लगे। कुछ समय के बाद गिलहरी होश में आ गई। तोते की आँखों में पछतावे के आँसू टपक पड़े। तोती के पास गिलहरी का धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं थे। ✮

पुस्तक

– महेन्द्र सिंह शोखावत

ज्ञान का भण्डार है पुस्तक,
सच्चे स्वर्ग का द्वार है पुस्तक।
करे अंधेरे में उजियारा,
जीवन का उद्धार है पुस्तक।।

दूर करे ये मन का अंधेरा,
जीवन में हो नया सवेरा।
जितना ज्यादा पढ़ते जाते,
उतना बढ़े ज्ञान का घेरा।।

मन की आँखें खोले पुस्तक,
पढ़ो–पढ़ो सब, बोले पुस्तक।
ज्ञान भरी बातें सिखलाती,
नया राज सब खोले पुस्तक।।

प्यारी कलियाँ

– गोविन्द भारद्वाज

कितनी प्यारी–प्यारी कलियाँ,
खिलती न्यारी–न्यारी कलियाँ।

फूलों का बचपन है कलियाँ,
महकाती उपवन हैं कलियाँ।

दिखती रंग–बिरंगी कलियाँ,
इन्द्रधनुषी सतरंगी कलियाँ।

मीठा पराग बनाती कलियाँ,
प्रेम रस–सा पिलाती कलियाँ

घूंघट अपना उठाती कलियाँ,
कोमल–कोमल भाती कलियाँ।

मिलती क्यारी–क्यारी कलियाँ,
कितनी प्यारी–प्यारी कलियाँ

दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. दक्ष — 12 वर्ष
   पदमावती सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)

2. शिव — 12 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)

3. प्रनीत — 7 वर्ष
   35, श्रीनाथ नगर, भुराव चार रास्ता,
   गोधरा (गुजरात)

4. चिराग — 7 वर्ष
   136/सी, पहली मंजिल,
   अनुसूया मदकर हाउस, वर्ली (मुम्बई)

5. अनन्त — 6 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

खुशबू साहू (सरगाँव, छत्तीसगढ़)।

लहर, नैतिक, चाँदनी मूलचंदानी, मीत, रैना बलवानी, मोक्ष, निहारिका अडवानी, नमन, धैर्य मोटवानी,नामिया, कुंज बुधवानी, यस्वी रासधारी, कृषा तोलानी, हार्दिक इसरानी, यशिका (गोधरा)।

यक्षमिता, लीया, दक्षा पुण्या, प्रिया, सूर्यकांत, सुनांजलि मौर्य, प्रियांशु प्रिया, उन्नति अरोड़ा, कशिश, प्रज्ञा, स्वीटी भारती, अयान, कौस्तव पाल, हनी सिंह, आशीष कुमार, हिमांशु सौरव, आशीष राज, खुशी कुमारी, सुमन, सूरज, निधि सिंह, वंशिका सथवारा, शिवांश यादव, निशांत, आयुष कुमार, सरोज दीपू, किरण (भुज)।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 28 फरवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई–मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे और मेरे परिवार को हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। इसमें बहुत–सी ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक बातें होती हैं। अक्टूबर अंक में कहानी 'नदी का घमंड' एवं 'मैं बेईमान नहीं' पढ़कर प्रेम शान्ति और दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना व सत्य बोलना सिखाती है।

– पूरन सिंह सैनी (पालम कॉलोनी, दिल्ली)

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कविता, कहनियाँ, चुटकले बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ–साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। हँसती दुनिया को जो कोई भी पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।

जब हँसती दुनिया घर में आती है तो हम बहन–भाइयों में पहले पढ़ने के लिए होड़ लग जाती है। बच्चों के लिए हँसती दुनिया एक अच्छी पत्रिका है। **– ज्योति शर्मा (चार के. एस. पी.)**

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मैं और मेरा परिवार इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका हँसती दुनिया पूरी दुनिया में अपने आप में अकेली पत्रिका है।

हर माह की शुरुआत में ही हमें पत्रिका का इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया के सभी तथ्य हमें प्रेम, शान्ति एवं अच्छे व्यवहार करना सिखाते हैं।

– मनोज कुमार (दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे इससे बहुत ज्ञानवर्द्धक बातें सीखने को मिलती हैं। यह पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ, अनमोल वचन, चित्रकथाएँ तथा कविताएँ बहुत प्यारी लगती हैं।

– विवेक ग्रोवर (फरीदाबाद)

हँसती दुनिया को मैं और मेरा परिवार इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका है। हर माह की शुरुआत में ही हमें पत्रिका का इंतजार रहता है। हँसती दुनिया हमें प्रेम, शान्ति एवं अच्छा व्यवहार करना सिखाती है।

– मनोज कुमार (जौनपुर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं हँसती दुनिया का हर महीने बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। मैं और मेरे घर वाले इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। मैं और मेरे परिवार वाले इसके बारे में तो यह कहते हैं कि हँसती दुनिया बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है।

हँसती दुनिया पत्रिका हर महीने समय से आ जाती है। मुझे इसमें 'अनमोल वचन', 'पढ़ो और हँसो', कविताएँ आदि पढ़ने में बहुत अच्छी लगीं।

मैं इसके बारे में कहना चाहता हूँ कि–

हँसती दुनिया पढ़ते और पढ़ाते जाओ।
जीवन में मुश्किलों के काँटों को हटाते जाओ।

– रानी–जवाहर (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

Download The App

Sant Nirankari Mission "SNM" App

The application is available for the iOS & Android smartphones.

Download on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

Scan QR code

Scan QR code to download Sant Nirankari Mission "SNM" App

For iOS Devices

For Android Devices

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
: License No. U (DN) -23/2021-2023
: Licensed to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : 9818883394